हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 3 अगस्त , 2025

9 बारिश के पानी की निकासी में नकारा गिरदावरी...

10 श्रमिकों ने रोष मार्च निकालकर श्रम विरोधी...

डॉ. विष्णु कांत शर्मा
Consultant Urologist
यूरोलॉजी विशेषज्ञ
MBBS, MS, MCh (Urology)
4+ Years Of Experience
स्वस्थ गुर्दे, बेहतर जीवन – आपकी सेहत, हमारी प्राथमिकता!
किडनी, ब्लैडर एवं प्रोस्टेट से जुड़ी बीमारियों का इलाज | मूत्र मार्ग में रुकावट एवं संक्रमण का उपचार | पथरी (Kidney Stone) का लेजर एवं सर्जिकल उपचार | पुरुषों में प्रजनन क्षमता से जुड़ी समस्याएँ | प्रोस्टेट ग्रंथि की समस्या एवं सर्जरी | लिंग एवं अंडकोष से जुड़ी समस्याओं का समाधान | सेक्स संबंधी समस्या
यदि आप भी इन समस्याओं से परेशान हैं, तो आज ही हमारे विशेषज्ञ से परामर्श करें
आयुष्मान योजना के तहत मुफ्त OPD व इलाज उपलब्ध!
एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

खबर संक्षेप

4 से 8 तक जिले में लगेंगे रोजगार मेले

चरखी दादरी। जिले के चोरों ब्लॉक में सोमवार से रोजगार मेलो का आयोजन किया जाएगा। मेलो में एसआईएस कंपनी 10वीं और 12वीं पास युवाओं का चयन करेगी। जिला रोजगार अधिकारी शशि शर्मा ने बताया कि मेला 4 अगस्त को बीडीपीओ ब्लॉक बाढ़ड़ा, 5 अगस्त को बीडीपीओ ब्लॉक झोझू, 6 अगस्त को बीडीपीओ ब्लॉक बौद कलां में लगाया जाएगा। दादरी के बीडीपीओ ब्लॉक में 7 और 8 अगस्त को मेले का आयोजन होगा इन मेलो में 19 से 40 वर्ष आयु के 10वीं व 12वीं पास इच्छुक प्रार्थी अपने रोजगार पंजीकरण कार्ड सहित सभी मूल दस्तावेज लेकर भाग ले सकता है।

गांव सिंघानी में खेल समारोह 7 और 8 को

ढिगावा मंडी। ऐतिहासिक गांव सिंघानी में 23 शहीदों की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला शहीदी दिवस समारोह इस वर्ष 7 और 8 अगस्त को मनाया जाएगा। समिति प्रधान विकास श्योराण ने बताया कि पहले दिन 7 अगस्त को खेलकूद कार्यक्रमों की शुरुआत सुबह 8:30 बजे दौड़ प्रतियोगिताओं से होगी। इसमें लड़कों के लिए 400 व 1600 मीटर, लड़कियों के लिए 400 मीटर, और बुजुर्ग व महिलाओं के लिए 100 मीटर की दौड़ होगी। नेशनल ओपन कबड्डी टूर्नामेंट का आयोजन होगा।

दुर्जनपुर में ओवरफलो ड्रेन में फिसली गाड़ी

बवानीखेड़ा। गांव दुर्जनपुर में बारिश का पानी प्रवेश न करे और ग्रामीणों का दिक्कत न हो इसके लिए दुर्जनपुर निवासी सुनील अपनी गाड़ी में खेत से कस्सी व अन्य उपकरण लेने के लिए निकला। ड्रेन कुंगड से पूठी तक जाती थी ओवरफलो होने के कारण गाड़ी चालक ने नियंत्रण खो दिया और गाड़ी ड्रेन में चली गई। सरपंच प्रतिनिधि प्रदीप चाहर ने बताया कि गांव में बाढ़ का माहौल बन गया है।

देश के कर्णधार बरसात के पानी बीच संवार रहे भविष्य

खेतों में जमा पानी रिहायशी कॉलोनी तक पहुंच गया

- शिक्षक व बच्चे पानी के बीच से निकलकर पहुंच रहे हैं क्लासरूम तक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

बारिश के पानी की सही ढंग से निकासी न होने का नजला शिक्षण संस्थानों पर भी पड़ा है। अब खेतों में जमा पानी रिहायशी कॉलोनी की तरफ पहुंच गया है। जिस वजह से करीब एक दर्जन स्कूलों में बारिश का पानी जमा है। पानी की वजह से शिक्षक व बच्चे पानी के बीच से निकलकर क्लासरूम तक जा रहे है। कई स्कूलों के बरामदों व कमरों में भी पानी जमा है। जिस वजह से पूरे स्कूल की सभी क्लासों के बच्चों को एक ही जगह बैठा कर पढ़ाया जा रहा है। हालात ये बने है कि बारिश के पानी की वजह से आधे से ज्यादा बच्चे फर्लो(छुट्टी) मार रहे है। जो बच्चे स्कूलों में पहुंच रहे है। वे पानी के बीच बैठ कर अपना भविष्य बना रहे है। इस बारे में शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों को जानकारी भी है,लेकिन उनके पास पानी की निकासी का कोई जुगाड़ नहीं है। फिलहाल पानी जमा होने से स्कूलों के भवनों के गिरने या डैमेज होने का खतरा भी मंडराने लगा है।

भिवानी। बडेसरा के स्कूल में जमा पानी का दृश्य और गांव बीरण के स्कूल में जमा बारिश का पानी। फोटो : हरिभूमि

वैसे तो जिले में पानी जमा होने वाले स्कूलों की संख्या डेढ दर्जन तक है,लेकिन एक दर्जन स्कूल तो ऐसे है। जिनमें पानी ज्यादा जमा होने के चलते बच्चों की पढाई पूरी तरह से प्रभावित हो रही है। गांव बीरण के स्कूल भवन परिसर में आधा फुट तक पानी जमा है। बच्चे उसी पानी को चिरकर क्लासरूम तक पहुंच रहे है। इसी तरह गांव कलिंगा के अमरू पाना स्थित सरकारी स्कूल के कमरों व बरामदों में आधा आधा फुट तक पानी जमा है। जिसके चलते स्कूल टीचर व बच्चों को पानी के बीच से होकर निकलना पड़ रहा है। यही स्थिति गांव बडेसरा के सरकारी स्कूल की बनी है।

आधे से ज्यादा बच्चे कर रहे हैं छुट्टी: स्कूल के भवन व परिसर में बारिश का पानी जमा होने की वजह से शिक्षक को समय पर स्कूल में पहुंच रहे है,लेकिन स्कूलों में पानी जमा होने का बहाना बनाकर बच्चे छुट्टी कर रहे है। फिलहाल जिन स्कूलों में बारिश का पानी जमा है। उन स्कूलों में बच्चों की हाजिरी आधी से भी कम है। बार बार शिक्षकों के कहने के बावजूद भी बच्चों की संख्या नहीं बढ पा रही है। स्कूलों में जमा पानी की निकासी के बाद ही बच्चों की संख्या में इजाफा हो पाएगा।

लोहारू। ग्वार फसल का निरीक्षण करते अधिकारी।

कृषि विभाग के तकनीकी प्रबंधक ने किया फसलों का निरीक्षण

- ग्वार की फसल को फंगस से बचाने के उपाए बताए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| लोहारू

इन दिनों लोहारू और आसपास के इलाके में सावन की झड़ी लगी हुई है तथा ग्वार, कपास, बाजरे की फसले लहलहा रही हैं। अधिक बरसात के कारण फसलों में रोग आदि लगने की आशंका बनी रहती है। फसलों को रोग आदि से बचाने और किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विभाग के तकनीकी प्रबंधक विजय भूंगला ने लोहारू इलाके में फसलों का निरीक्षण किया तथा किसानों को फसलों की रोगों से बचाने के लिए सलाह दी। विजय भूंगला ने बताया कि लगातार हो रही वर्षा के कारण ग्वार फसल में नुकसान हो सकता है। निरंतर वर्षा का मौसम बने रहने के कारण ग्वार फसल में बैक्टीरिया जनित रोगों के लगने की अधिक संभावना है। ऐसे रोग से पूरे खेत की ग्वार की फसल बर्बाद हो सकती है। इस रोग में ग्वार के पत्ते काले पड़ जाते हैं । इस प्रकार के लक्षण यदि फसल में दिखाई दे तो किसान कॉपर ऑक्सिक्लोराइड (सीओसी) 500 ग्राम प्रति एकड़ तथा साथ में स्ट्रैप्टो साइकलिंन 30 ग्राम प्रति एकड़ कि दर से 150 से 200 लीटर पानी में मिला कर स्प्रे करें।

हर व्यक्ति एक पेड़ अपनी मां के नाम जरूर लगाएं: सर्राफ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। कोंट गांव में आयोजित कार्यक्रम में मेधावियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि आज पर्यावरण का संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा है। पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने जरूरी हैं। इसलिए हमें एक पेड़ अपनी मां के नाम जरूर लगाना चाहिए।

पेड़ लगाने के साथ-साथ उनका संरक्षण भी बहुत जरूरी है। विधायक सर्राफ शनिवार को गांव कोंट के बाबा कांशी धाम परिसर में आयोजित जिला स्तरीय वन महोत्सव को बतौर और मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने गांव के विकास के लिए 30 लाख रुपए की राशि देने की घोषणा की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बवानी खेड़ा से विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए हमें शुद्ध ऑक्सीजन की जरूरत है और शुद्ध ऑक्सीजन केवल पेड़-पौधों से ही मिलती है। उन्होंने ग्रामीणों से आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाएं। कार्यक्रम में दौरान वन विभाग द्वारा पर्यावरण संरक्षण और पौधारोपण को लेकर आयोजित की गई स्कूली बच्चों के बीच प्रतियोगिता में अव्वल आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वालों में मेघा शर्मा, गौरव कुमार, प्रियांक्षी कौशिक आदि शामिल थे।

सनराईज कबड्डी लीग के लिए ट्रायल 6 को

भिवानी। आगामी दिनों में होने वाली सनराईज कबड्डी लीग (एसआरकेएल) के लिए ट्रायल प्रतियोगिता 6 अगस्त को सुबह साढ़े 8 बजे से होगी। सनराईज कबड्डी लीग में अर्जुन एवं द्रोणाचार्य अवॉर्डी कोच अशन कुमार सांगवान को तेलंगाना डेकन वॉरियर का मुख्य कोच भी नियुक्त किया गया।

इस लीग में 10 टीमें बनाई जाएगी, जिसमें प्रत्येक टीम में 24 खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। कोच अशन कुमार सांगवान ने बताया कि 6 अगस्त को सुबह साढ़े 8 बजे से भिवानी राजीव कॉलोनी स्थित चौ. रणसिंह कबड्डी अकादमी (नज़दीक सिटी स्टेशन) में इस ट्रायल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता के लिए चार श्रेणियों में खिलाड़ियों को बांटा जाएगा। जिसमें श्रेणी-ए में 10 लाख रूपये, श्रेणी-बी में 6 लाख रूपये, श्रेणी-सी में 3 लाख रुपये तथा श्रेणी-डी में डेढ़ लाख रूपये खिलाड़ियों का बेस प्राइज रखा गया है। प्रत्येक टीम में 24 खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा, जिसमें 16 खिलाड़ियों को विभिन्न श्रेणियों के बाद चयनित किया जाएगा।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
RANKED #19 In North India | RANKED #39 Pvt. Institutes in India | RANKED #41 Across India | RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
ADMISSIONS OPEN 2025-26
Applications are invited on prescribed performa from eligible candidates for filling up the Vacant/Leftover Seats/ Tuition Fee Waiver/Economical Weaker Section of B.Tech 1st year courses and B.Tech 2nd year (LEET) courses as per HSTES 2025-26 guidelines and reservation policy. Application performa can be downloaded from the Institute website or can be taken from the admission office. The duly filled Application performa along with necessary documents must be submitted in the Institute admission office.

Particulars	1st Counselling	2nd Counselling
Last Date of Receipt of Applications	04/08/2025	12/08/2025
Physical Reporting and Submission of Fee	05/08/2025	13/08/2025
Daily Basis On-Spot Physical Counselling on first come-first serve basis	------------------	13/08/2025 onwards upto Cutoff date

B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DS), CSE (AI & ML), FIRE TECH. & SAFETY, ELECTRICAL MECHANICAL, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGG., CIVIL
COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS IN FLEXIBLE TIMINGS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY) | B.TECH (CSE) | M.TECH (CSE) | MBA
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946 | www.gangainstitute.com

OSGU OM STERLING GLOBAL UNIVERSITY
(APPROVED BY UGC, MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)
EXCELLENCE IN EDUCATION 17 Years
Discover more at www.osgu.ac.in
info@osgu.ac.in
/OSGUHISAR
LIMITED SEATS
"READY TO EXPLORE NEW HORIZONS AND EMBRACE THE CHALLENGES OF HIGHER EDUCATION."

Pharm.D
B.Pharma
D.Pharma
M.Pharma (Pharmaceutical Chemistry, Industrial Pharmacy, Pharmaceutical Quality Assurance, Regulatory Affairs, Pharmaceutical Analysis Pharmaceutics)
MPT
B.Sc./M.Sc. Paramedical (MLT, OPTOMETRY, OT & AT, Radiology & Imaging Tech.)
B.Sc (Hons.) M.Sc. Agriculture
BA LLB/LLB/LLM
B.Plan/M.Plan
B.Sc./M.Sc. Forensic Sci.
B.Tech Fire Safety
CSE-AI, Cyber Security
Electrical, Mech., Civil, ECE, P&P
Scholarship AVAILABLE
HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR GIRLS & BOYS
RCI COLLEGE CODE HR 056
Special Education
B.Ed. (HI / VI / ID / LD / MD)
B.Sc. Hons Clinical Psychology
B.A. B.Ed. Special Education (ID-Middle Stage)
B.Ed. M.Ed. Special Education (ID, SLD)
B.Sc./ M.Sc. Hotel Mgmt.
B.Sc./ M.Sc. Yoga & Naturopathy
Transport Facility from Hisar, Hansi, Fatehabad, Bhiwani, Jind, Tohana, Narwana and near by areas.
Campus : NH-52, Hisar-Chandigarh Road, Hisar-125001, Haryana
8607899999, 8255899999

नौकरी करने वाले न करें ये फाइनेंशियल गलतियां वर्ना पड़ सकता है पछताना

सुझाव | बिजनेस डेस्क

नौकरीपेशा लोगों के लिए वित्तीय स्थिरता हासिल करना महत्वपूर्ण होता है। लेकिन अनजाने में की गईं कुछ सामान्य गलतियां, बचत और भविष्य की योजनाओं को प्रभावित कर सकती हैं। सैलरी बढ़ने के साथ खर्च बढ़ाना, क्रेडिट कार्ड का गलत इस्तेमाल, बचत और निवेश को नजरअंदाज करना, इमरजेंसी फंड की कमी, और बजट न बनाना जैसी गलतियां आगे चलकर वित्तीय संकट का कारण बन सकती हैं। इन गलतियों से बचकर आप अपने वित्तीय लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। आइए इन पांच वित्तीय गलतियों और उनसे बचने के तरीकों के बारे में जानते हैं।

सैलरी बढ़ने पर खर्च बढ़ाना

सैलरी बढ़ते ही लोग अक्सर अपने खर्चों को भी बढ़ा लेते हैं, जिसे 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन' कहा जाता है। महंगे गैजेट्स, लग्जरी आइटम्स या बार-बार बाहर खाने जैसे फालतू खर्चे आपकी बचत को खत्म कर सकते हैं। इसका समाधान यह है कि अपनी बढ़ी हुई सैलरी का कम से कम 50 फीसद हिस्सा बचत या निवेश में लगाएं। उदाहरण के लिए, अगर आपकी सैलरी में 10,000 रुपये की वृद्धि होती है, तो कम से कम 5,000 रुपये को बचत खाते, म्यूचुअल फंड या अन्य निवेश विकल्पों में डालें।

क्रेडिट कार्ड का गलत इस्तेमाल

सैलरी बढ़ने के साथ कई लोग क्रेडिट कार्ड ले लेते हैं और हर छोटी-बड़ी खरीदारी के लिए इसका उपयोग शुरू कर देते हैं। क्रेडिट कार्ड के चार्जेस, लेट फी, और ब्याज दरों की जानकारी न होने पर यह वित्तीय बोझ बन सकता है। क्रेडिट कार्ड का उपयोग सीमित और सोच-समझकर करें। बिल समय पर चुकाएं और अनावश्यक खरीदारी से बचें। हमेशा अपने क्रेडिट कार्ड की शर्तों, जैसे वार्षिक शुल्क और ब्याज दर, को समझ लें ताकि आप अतिरिक्त खर्चों से बच सकें।

बचत को नजरअंदाज करना

कई लोग सोचते हैं कि बचत और निवेश 30-35 साल की उम्र में शुरू करना चाहिए, लेकिन यह एक बड़ी गलती है। पहली नौकरी से ही अपनी सैलरी का 20-30 फीसद हिस्सा बचत और निवेश में लगाना शुरू करें। उदाहरण के लिए, सिप (एसआईपी) के माध्यम से म्यूचुअल फंड में छोटी राशि से निवेश शुरू करें, जो लंबे समय में चक्रवृद्धि ब्याज के साथ बढ़ेगा। जल्दी शुरू करने से आपके पास रिटायरमेंट या बड़े वित्तीय लक्ष्यों के लिए पर्याप्त धन जमा हो सकता है।

हेल्थ इंश्योरेंस की अनदेखी

इमरजेंसी फंड और हेल्थ इंश्योरेंस को टालना वित्तीय सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकता है। अप्रत्याशित खर्चों, जैसे मेडिकल इमरजेंसी या नौकरी छूटने की स्थिति, के लिए कम से कम 6 महीने का इमरजेंसी फंड जरूरी है। उदाहरण के लिए, अगर आपका मासिक खर्च 50,000 रुपये है, तो 3 लाख रुपये का फंड बनाएं। इसके अलावा, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान लें, जो अस्पताल के खर्चों को कवर करे और आपकी बचत को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण मददगार साबित होगा।

बजट न बनाना

अगर आपको यह नहीं पता कि आपकी सैलरी कहां खर्च हो रही है, तो पैसा जल्दी खत्म हो सकता है। बिना बजट बनाए खर्च करना वित्तीय अनुशासन को तोड़ता है। बजट बनाकर अपने खर्चों को श्रेणियों में बांटें, जैसे किराया, किराना, बचत, और मनोरंजन। उदाहरण के लिए, 50-30-20 नियम का पालन करें। सैलरी का 50 फीसद जरूरी खर्चों पर, 30 फीसद इच्छाओं की पूर्ति करने पर और 20 फीसद बचत व निवेश के लिए आवंटित किया जाना चाहिए। बजट बनाने से आप अनावश्यक खर्चों को कम कर सकते हैं और अपने वित्तीय लक्ष्यों की ओर बढ़ सकते हैं।

वित्तीय अनुशासन का महत्व

इन गलतियों से बचने के लिए वित्तीय अनुशासन अपनाना जरूरी है। नियमित रूप से अपनी आय और खर्चों की समीक्षा करें, और अपने वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करें, जैसे घर खरीदना या रिटायरमेंट प्लानिंग। छोटे-छोटे कदम, जैसे ऑटोमेटेड बचत खाता या एसआईपी , लंबे समय में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। अगर आप निवेश के विकल्पों को समझने में नए हैं, तो वित्तीय सलाहकार की मदद लेना फायदेमंद हो सकता है।

25 से 35% की दर से दे रहे हैं रिटर्न, इनकी रेटिंग भी हाई, अगर किसी एमएफ की स्कीम की टॉप रेटिंग है, तो फंड बेहतर विकल्प

निवेश के लिए सबसे सस्ते म्यूचुअल फंड, दिला सकते हैं बढ़िया रिटर्न

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

स्कीम का एक्सपेंस रेश्यो कम है तो आपके निवेश की लागत कम होगी

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय जिन बातों का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिए, उनमें उनका एक्सपेंस रेश्यो और रेटिंग भी है। किसी म्यूचुअल फंड स्कीम का एक्सपेंस रेश्यो कम होने का मतलब है कि आपके निवेश की लागत कम होगी। वहीं, म्यूचुअल फंड स्कीम का ट्रैक रिकॉर्ड और निवेश की रणनीति के आधार पर उसकी रेटिंग बनती है। अगर ये दोनों बातें पॉजिटिव हैं, यानी एक्सपेंस रेश्यो बहुत कम है और साथ में फंड को टॉप रेटिंग मिली है, तो इसका मतलब है कि वह फंड बेहतर विकल्प बन सकता है। अगर इसके बाद भी उनके प्रदर्शन को लेकर आशंका है तो हमने ऐसे 7 इक्विटी स्कीम की जानकारी दी है, जिनका एक्सपेंस रेश्यो कम है, रेटिंग मजबूत है और उन्होंने 5 साल की अवधि में हाई रिटर्न भी दिया है। चाहे लम्प सम हो या एसआईपी। आप भी इन पर विचार कर सकते हैं।

बंधन स्मॉल कैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.39 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 5 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 37.47 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 33.96 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.39%
- रेटिंग : 5 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 37.47% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 33.96% सालाना
- कुल एसेट्स : 12,982 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 1,000 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 100 रुपये

एडलवाइस स्मॉल कैप फंड

एडेलवाइस स्मॉलकैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.42 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 4 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 35.10 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 29.52 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.42%
- रेटिंग : 4 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 35.10% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 29.52% सालाना
- कुल एसेट्स : 4,930 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 100 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 100 रुपये

एडेलवाइस फ्लेक्सी कैप फंड

एडेलवाइस फ्लेक्सी कैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.43 फीसदी है। इसे वैल्यू रिसर्च पर 4 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 24.54 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 21.89 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.43%
- रेटिंग : 4 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 24.54% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 21.89% सालाना
- कुल एसेट्स : 2,802 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 100 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 100 रुपये

इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.44 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 5 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 35.01 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 31.47 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.44%
- रेटिंग : 5 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 35.01% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 31.47% सालाना
- कुल एसेट्स : 7,425 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 1,000 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 500 रुपये

केनरा रोबेको लार्जकैप फंड

केनरा रोबेको लार्जकैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.45 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 4 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 20.44 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 18.27 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.45%
- रेटिंग : 4 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 20.44% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 18.27% सालाना
- कुल एसेट्स : 16,617 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 5,000 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 100 रुपये

जेएम फ्लेक्सी कैप फंड

जेएम फ्लेक्सी कैप फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.49 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 4 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है। फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 27.12 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 24.78 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.49%
- रेटिंग : 4 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 27.12% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 24.78% सालाना
- कुल एसेट्स : 6,144 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 1,000 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 100 रुपये

एलआईसी म्यूचुअल फंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड

एलआईसी म्यूचुअल फंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड का एक्सपेंस रेश्यो 0.50 फीसदी है और इसे वैल्यू रिसर्च पर 4 स्टार की मजबूत रेटिंग मिली है. फंड ने 5 साल में लम्स सम पर 33.78 फीसदी सालाना और 5 साल की एसआईपी में 32.20 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है।

- एक्सपेंस रेश्यो : 0.50%
- रेटिंग : 4 स्टार
- 5 साल का लम्प सम रिटर्न : 33.78% सालाना
- 5 साल का एसआईपी रिटर्न : 32.20% सालाना
- कुल एसेट्स : 1,053 करोड़ रुपये (30 जून, 2025)
- मिनिमम लम्स सम : 5,000 रुपये
- मिनिमम एसआईपी : 200 रुपये

6 साल में 200% उछला सोना, अगले 5 वर्ष में सवा 2 लाख रु. का हो सकता है 10 ग्राम!

किसी भी तरह के भूराजनीतिक तनाव के बीच सोना डिमांड में रहेगा

सर्राफा | बिजनेस डेस्क

1 सेफ एसेट के तौर पर जाना जाता है सोना, हर कोई करता है निवेश

"अगले पांच साल में सोने की कीमतें सवा दो लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक जा सकती हैं। गोल्ड बाजार के जानकारों का कहना कि सोना से सबसे लोकप्रिय और सुरक्षित निवेश के तौर पर जाना जाता है। चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों सोने ने हमेशा से ही अच्छा और सुरक्षित रिटर्न दिया है। इस तेजी में मुख्य रूप से कोविड-19 महामारी, बेहद ज्यादा ढीली मौद्रिक नीतियों, भू-राजनीतिक तनाव और वित्तीय बाजार में अनिश्चितता का हाथ रहा। 2025 में सोने ने एमसीएक्स पर अपना रिकॉर्ड हाई 1,01,078 रुपये प्रति 10 ग्राम देखा।

एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में सोने की कीमत पिछले 6 साल में 200 प्रतिशत तक बढ़ी हैं। मई 2019 में सोना 30,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर था, लेकिन जून 2025 तक कीमत बढ़कर करीब 1,00,000 रुपये प्रति 10 ग्राम से अधिक हो गई। इस साल की बात करें तो सोने की कीमतों ने 2025 में निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का भाव 30 प्रतिशत से ज्यादा चढ़ा है। पिछले 6 साल पर नजर डालें तो एमसीएक्स पर सोने का भाव मई 2019 में लगभग 32,000 प्रति 10 ग्राम था। यह अब बढ़कर लगभग 97,800 प्रति 10 ग्राम हो गया है, यानि कि 200 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि।

अगले पांच साल में सोने की कीमतें सवा दो लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक जा सकती हैं। गोल्ड बाजार के जानकारों का कहना कि सोना से सबसे लोकप्रिय और सुरक्षित निवेश के तौर पर जाना जाता है। चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों सोने ने हमेशा से ही अच्छा और सुरक्षित रिटर्न दिया है। इस तेजी में मुख्य रूप से कोविड-19 महामारी, बेहद ज्यादा ढीली मौद्रिक नीतियों, भू-राजनीतिक तनाव और वित्तीय बाजार में अनिश्चितता का हाथ रहा। 2025 में सोने ने एमसीएक्स पर अपना रिकॉर्ड हाई 1,01,078 रुपये प्रति 10 ग्राम देखा। लॉन्ग टर्म में संरचनात्मक रूप से ऊंची कीमतों के लिए माहौल अभी भी सपोर्टिव बना हुआ है। पोर्टफोलियो डायवर्सिफिकेशन में सोने का अहम रोल बरकरार है और आगे भी रहेगा। सोने के भविष्य की बात करें तो किसी भी तरह के भूराजनीतिक तनाव के बीच सेफ एसेट के तौर पर सोना डिमांड में रहेगा। साथ ही इसकी मांग के नए रास्ते भी खुल रहे हैं। जैसे कि कहा जा रहा है कि चीन बीमा क्षेत्र में कथित तौर पर अपने एसेट्स अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) का 1% सोने में लगा रहा है।

5 साल में कहां होगी कीमत

एक रिपोर्ट के मुताबिक, एक एक्सपर्ट का कहना है कि अगले 5 साल के दौरान सोने की कीमतों में शानदार तेजी जारी रह सकती है। भू-राजनीतिक तनाव और ट्रेड वॉर के चलते सुरक्षित निवेश के रूप में सोने की मांग बनी रहने की उम्मीद है। पिछले 5 वर्षों में भारतीय बाजार में सोने का भाव 18% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ा। अगर यही रफ्तार जारी रही तो आगे के 5 सालों के दौरान सोने की कीमतें 2,25,000 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकती हैं।

कंसोलिडेशन का अनुमान

वहीं दूसरी ओर एक एजेंसी की गोल्ड स्ट्रैटेजी रिपोर्ट में कहा है कि सोने की कीमतें अब कंसोलिडेशन फेज यानि ठहराव के दौर में जा सकती हैं। आगे तेजी के लिए किसी बड़े और नए ट्रिगर की जरूरत होगी। अब ज्यादा स्पष्टता का इंतजार करना चाहिए या किसी निर्णायक ट्रिगर का, जो गोल्ड की कीमतों को फिर से पुश करे। इस बीच गोल्ड में कंसोलिडेशन यानी ठहराव का दौर रहेगा। रिपोर्ट में तेजी थमने के पीछे कई अहम कारण बताए गए हैं। जैसे कि इजराइल-ईरान और रूस-यूक्रेन के बीच भूराजनीतिक संघर्ष का असर हल्का पड़ना, टैरिफ वॉर में कमी, ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें टलना, केंद्रीय बैंकों की ओर से धीमी खरीदारी और गोल्ड की कीमतें काफी समय से ऊंचे स्तर पर होना।

स्टॉक मार्केट ऊंचाई पर हो तो बंद नहीं करें एसआईपी, संयम बरतें

बिजनेस डेस्क

जब शेयर बाजार नई ऊंचाइयों पर पहुंचता है, तो कई निवेशकों के मन में सवाल आता है कि क्या अब सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) रोक देना चाहिए? उन्हें लगता है कि ऊंचे स्तर पर निवेश करने से रिटर्न कम मिल सकता है या घाटा हो सकता है। हालांकि, इन्वेस्टमेंट एक्सपर्ट की राय इसके ठीक उलट है। उनका कहना है कि ऐसा सोचना निवेश की मूल रणनीति के खिलाफ है और इससे लंबे समय में नुकसान हो सकता है। इसलिए जब बाजार ऊंचाइयों पर हो तो निवेशकों को संयम बरतना चाहिए। इससे वे लान्ग टर्म में अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं और अपने पैसे को बढ़ा सकते हैं। ऐसे समय में निवेशकों को थोड़ा स्मार्ट और चूजी बन जाना चाहिए ताकि, आने वाले समय में परेशानी न हो। इसलिए निवेश बंद न करें और इंतजार करें। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

एसआईपीऔर डिप-बायिंग को साथ चलाना समझदारी

जानकारों का कहना है कि एसआईपी को रोकने की बजाय उसे जारी रखना चाहिए और अगर आपके पास अतिरिक्त रकम है, तो बाजार में गिरावट के दौरान उसमें लंबी अवधि के नजरिए से निवेश करना बेहतर रहता है। उनके मुताबिक, मासिक बचत एसआईपी के जरिए होनी चाहिए और अगर बाजार गिरता है, तो उसमें अतिरिक्त निवेश किया जा सकता है। इससे लॉन्ग टर्म में फायदा मिलता है। हालांकि, बाजार कब गिरेगा, इसका अंदाजा लगाना आसान नहीं है। डिप्स को पहचानना मुश्किल होता है, इसलिए निवेशकों के लिए बेहतर रणनीति यह हो सकती है कि वो लंप सम राशि को एसआईपी और डिप-बायिंग दोनों के लिए अलग-अलग हिस्सों में निवेश करें।

2025 में अब तक 1.12 करोड़ एसआईपी बंद

एएमएफआई (एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया) के आंकड़ों के मुताबिक, 2025 की शुरुआत से लेकर अब तक करीब 1.12 करोड़ एसआईपी अकाउंट बंद हो चुके हैं। इसका मतलब है कि बहुत से निवेशकों ने बाजार की ऊंचाई देखकर अपनी एसआईपी रोक दी है और बाजार गिरने पर दोबारा शुरू करने की सोच रहे हैं। एसआईपी को रोकना गलत कदम है। उनके मुताबिक, जब बाजार ऊंचा होता है, तो एसआईपी रोकना सही लग सकता है। लेकिन ये कदम फाइनेंशियल गोल्स को नुकसान पहुंचा सकता है। एसआईपी का फायदा यही है कि ये आपको समय पर और बिना भावनाओं के निवेश करने में मदद करता है। भारतीय बाजार ने पिछले 10 सालों में कई बार नई ऊंचाइयां देखी हैं और हर बार वह और ऊपर गया है। अगर लोग हर बार एसआईपी रोकते, तो वे बड़े फायदे से चूक जाते।

उलटी सोच हो सकती है एसआईपी रोकना

एसआईपी को रोकने के फैसले को 'काउंटरइंट्यूटिव' यानी आम समझ के खिलाफ मानते हैं। उनका कहना है कि इतिहास यही बताता है कि जो निवेशक लगातार निवेश करते हैं, वो ज्यादा फायदा कमाते हैं। बार-बार एग्जिट और एंट्री करने से फायदा नहीं होता। वो कहती हैं, एसआईपी का मकसद ये है कि आपकी हर महीने की बचत बाजार में लगती रहे। अगर इसे नियमित और अनुशासित तरीके से किया जाए तो कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। लेकिन कई बार लोग बाजार के मूवमेंट को देखकर एसआईपी बदलने लगते हैं, जो सही नहीं है।

इंस्टाग्राम रील वाली फाइनेंशियल प्लानिंग के साइड इफेक्ट गहरे

सतर्कता | बिजनेस डेस्क

हमेशा पैटर्न यानी ढर्रे पर काम करना बेहद अच्छा होता है चाहे वह वह जिंदगी से जुड़ा हो, काम हो या पैसे से जुड़ा मामला। शायद इसी वजह से कुछ खास नियम हमेशा याद रखने चाहिए। वैसे हम सभी के साथ ऐसा होता है। पहला पैसा से जुड़ा नियम जो तुरंत समझ आया, वह नियम है 72 का नियम। यह बहुत ही सीधा और सरल होता है। आप 72 को उस ब्याज दर से भाग देते हैं जो आपको निवेश पर मिल रही है, और जो संख्या आएगी, वह बताएगी कि आपके पैसे को दोगुना होने में कितने साल लगेंगे। उदाहरण के लिए, अगर आपका निवेश 15 प्रतिशत रिटर्न दे रहा है, तो आपका पैसा लगभग 5 साल में दोगुना हो जाएगा। सीधा है ना? यही कारण है कि यह नियम हमेशा ज़ेहन में रहता है। लेकिन आपको पता है, पिछले 3 से 4 सालों में बहुत सारे ऐसे नियम ऐसे आएं है जो चौकाने वाले हैं। जैसे रील्स, इन्फोग्राफिक्स, न्यूज़लेटर में लेकिन उनमें से एक भी मेरे दिमाग में टिक नहीं पाया जैसे रूल ऑफ 72 था। सच कहें तो बहुत सारे नंबर और फॉर्मूले सामने आ गए हैं।

इंस्टाग्राम पर दिखने वाले फाइनेंशियल रूल्स सुनने में आसान और रोचक जरूर हैं

इंस्टाग्राम फाइनेंस

जानकारों का कहना है कि शायद यही कारण था कि 2016 के आसपास जब इंस्टाग्राम फाइनेंस की शुरुआत हुई, तो वह बहुत तरोताजा और नया लगा। तब लोग ऐसे मनी टिप्स शेयर कर रहे थे जो सरल और अपनाने लायक लगते थे। मुझे आज भी याद है मैंने सोचा था 'ये नियम तो वाकई समझ में आते हैं।' इंटरनेट सस्ता और तेज हो गया था। क्रिएटर्स की रचनात्मकता के कारण फाइनेंस अब आम लोगों तक पहुंचने लगा था। 2019 से 2021 के बीच कुछ फाइनेंस क्रिएटर्स के साथ काम किया और उनके लिए ऐसे स्क्रिप्ट्स भी लिखे जो पर्सनल फाइनेंस को आसान और समझने लायक बनाते थे। कुछ पोस्ट वायरल भी हुए। कुछ टिप्स काफी स्मार्ट लगे। लेकिन फिर धीरे-धीरे मुझे एक बात खटकने लगी। ये सब दिखने में तो बहुत प्रैक्टिकल थे, लेकिन असल जिंदगी में ये ज़्यादातर काम नहीं करते थे।

नियम चले सोशल मीडिया पर, ज़िंदगी में नहीं

सोशल मीडिया पर फाइनेंस की बातें एक संरचना देती हैं। लोगों को लगता है कि एक निश्चित तरीका है, जिससे सब ठीक हो जाएगा। पैसे को लेकर लोग अस्थिरता और चिंता रखते हैं। तो जब कोई कहता है इस एक नियम को फॉलो करो और कंट्रोल आप के हाथ में हो जाएगा, तो यह तुरंत राहत देता है। यह मानसिक रूप से उस स्थिति से जुड़ता है, जिसे साइकोलॉजी में कॉग्निटिव क्लोजर कहते हैं। यह उस मनोवैज्ञानिक झुकाव को दर्शाता है, जिसमें हमारा दिमाग स्पष्ट उत्तर से बेहतर महसूस करता है, भले ही वह उत्तर बहुत सरलीकृत ही क्यों न हो। एक और विचार है नियंत्रण का भ्रम सिर्फ इक नियम फॉलो करने से जैसे किसी विशेष प्रतिशत बचाना या केवल एक तय खर्च श्रेणी के भीतर रहना, लोग सोचते हैं कि वे जीवन पर नियंत्रण कर रहे हैं। यह एहसास, चाहे अस्थायी ही सही, सील अनुभूति देता है। लगता है आप सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं।

बुनियादी सच भूल रहे नियम

आपके खर्च हर महीने साफसुथरे प्रतिशत की तरह व्यवस्थित नहीं होते। आपकी आमदनी एक समय स्थिर हो सकती है और फिर बदल सकती है। परिवार की जिम्मेदारी आ सकती है। किराया बढ़ सकता है। कोई स्वास्थ्य समस्या रुकावट ला सकती है। या कभी-कभी आपको बस ब्रेक की जरूरत हो सकती है। 500 प्रतिदिन बचाएं या 503020 वाला बजट विभाजन जैसे नियम इन बदलावों के लिए जगह नहीं छोड़ते। ये ऐसे बनाए गए हैं मानो जीवन एक सीधी रेखा हो। एक और विचार है जिसे अक्सर सोचा जाता है। मोरल लाइसेंसिंग कभी व्यक्ति एसआईपी ऑटोमेट करने का नियम फॉलो करता है या कुछ हफ्तों तक बजट में रहता है, और फिर वही अच्छा महसूस करना उसे कहीं और ढील देने का बहाना दे देता है। यह मैं अच्छा कर रहा था, अब थोड़ा आराम का चक्र बनाता है। नियम समय-समय पर फिर से शुरू करने वाला जैसे ट्रेडमिल बन जाता है। ऍनकरिंग नामक एक असर होता है जहां कोई संख्या जैसे 30% या 500 एक मानक बन जाती है। यदि आप उस मानक पर नहीं ठहर पाते, तो ऐसा लगता है जैसे आप असफल हो गए हैं। भले आपके फैसले पूरी तरह से उपयुक्त हों, फिर भी आपको लगता है कि आप कुछ गलत कर रहे हैं। यह लगातार तनाव जोड़ता है और व्यक्ति वैध निर्णयों पर ही शक करने लगता है।

क्या मदद कर सकता है

मेरे विचार में ज़्यादातर लोगों को एक और नया नियम नहीं चाहिए। इससे ज़्यादा मदद करती है कुछ आसान सवाल पूछना, जो आपकी ज़िंदगी की असल हालत को ध्यान में रखते हैं। मुझे हर महीने कितना चाहिए ताकि मैं स्थिर महसूस कर सकूं? इसमें किराया, बिल, राशन आदि शामिल हैं। जो बैंक बैलेंस देखते समय चुप्पी में आने वाले घबराहट को रोकते हैं। यह संख्या जानने से आपकी चिंता थोड़ी कम होगी, पूरी समस्या हल नहीं होती लेकिन राहत जरूर मिलती है। मैं अभी किस समस्या का हल ढूंढ़ रहा हूं। कुछ महीने आप बचत करना चाहते हैं, कुछ महीने घर की देखभाल करनी पड़ सकती है, कुछ महीने सिर्फ शांति की ज़रूरत होती है। आपकी पैसे की आदतें आपके जीवन के पड़ावों के अनुसार बदल सकती हैं और इसमें कोई गलत नहीं है। मैं क्या ऑटोमेट कर सकता हूं, बिना घबराए? चाहे 2,000 की एसआईपी हो या खर्च देखने के लिए हफ्ते में एक रिमाइंडर एक ऐसी चीज चुनें जो एक लय बनाने में मदद करे। जरूरी नहीं कि सब कुछ 500/दिन जैसा सख्त हो यह कोई जिम की मेंबरशिप नहीं है जिसे आप अगले हफ्ते भूल जाएं। सच्चाई यह है कि छोटे और लगातार प्रयास बेहतर काम करते हैं, बजाय पूर्णता और तनाव के। पैसा हो या जीवन, अभी कहानी बाकी है (जैसा एसआरके ने कहा था 'ओम शांतिओम' में) और आप ही तय करेंगे कि अगला दृश्य कैसा होगा।

खबर संक्षेप

गणितीय उत्कृष्टता की ओर एक सशक्त कदम

बवानीखेड़ा। निदेशक एससीईआरटी के मार्गदर्शन में 1-2 अगस्त 2025 को आयोजित 2 दिवसीय गणित ऑलंपियाड क्षमता निर्माण कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक रहा। राज्य के सभी जिलों से आए डीएमएस एवं मैथमेटिक्स फैकल्टी ने एस.ए.कटरे, श्किरन बारवे एवं आलोक कुमार के मार्गदर्शन से गणितीय अवधारणाओं और प्रशिक्षण तकनीकों का गहन ज्ञान अर्जित किया। सभी जिला गणित विशेषज्ञों की ओर से हम इस कार्यक्रम के आयोजकों और सभी प्रशिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। यह पहल निश्चित रूप से गणित शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों के प्रदर्शन को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी।

तीन चरणों में चलेगा हर घर तिरंगा अभियान

चरखी दादरी। अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने और तिरंगे के साथ व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव की श्रृंखला में लगातार चौथे वर्ष 'हर घर तिरंगा' अभियान मनाया जा रहा है। 'हर घर तिरंगा' अभियान 15 अगस्त 79वें स्वतंत्रता दिवस तक तीन चरणों में चलेगा। पहला चरण 8 अगस्त तक, दूसरा चरण 9 से 12 अगस्त तक तथा तीसरा चरण 13 से 15 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा। उपायुक्त मुनीश शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय की ओर से हर घर तिरंगा अभियान गाइड लाइंस जारी की गई हैं।

नकारात्मक विचारों से दूर रहने की जरूरत

चरखी दादरी। आज इंसान को सबसे ज्यादा अपने आपको व्यसन-विकारों, बुराइयों और नकारात्मक विचारों से खुद दूर रखने करने की जरूरत है। जो केवल आध्यात्मिकता से ही संभव है। यह उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की झोझू कलां शाखा के तत्वावधान में नशा मुक्त सद्भावना युक्त समाज-निर्माण एवं रक्षाबंध विषय को लेकर चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत झोझू कलां स्थित भारतीय स्टेट बैंक , कोऑपरेटिव बैंक, हरियाणा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, एचडीएफसी बैंक मैनेजर सहित स्टाफ सदस्यों को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन ने व्यक्त किए।

देश को विकसित बनाने में सभी का योगदान जरूरी

भिवानी। विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि हम सब को मिलकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को साकार करना है। भारत को विकसित बनाने में सभी का योगदान जरूरी है। उन्होंने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार किसानों के साथ साथ- साथ सभी वर्ग के लिए कल्याणकारी योजनाएं लागू कर रही है। विधायक सर्राफ शनिवार को स्थानीय लघु सचिवालय परिसर स्थित डीआरडीए सभागार में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी से सीधे प्रसारण दिखाने के कार्यक्रम के दौरान अपना संदेश दे रहे थे। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने देश भर के किसानों के खाते में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 20 वीं किस्त जारी की।

हरियाणा जागृति मोर्चा ने मुख्यमंत्री को भेजी शिकायत

बारिश के पानी की निकासी में नकारा गिरदावरी, मुआवजा ही बचा सहाराः सिंधू

घरों में पानी घुसने से होने लगे मकान डैमेज, मच्छरों की वजह से महामारी फैलने की बनी आशंका

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

बारिश के पानी की सही ढंग से निकासी न होने की वजह से चहुंओर हाहाकार मचा है। इसी समस्या को लेकर शनिवार को हरियाणा जागृति मोर्चा के सदस्यों ने सीएम को ज्ञापन भेजा। इससे पूर्व मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू कस्बा बवानीखेड़ा के लोगों से मिले और जमा बारिश के पानी के बारे में जानकारी ली। बाद भेजे गए ज्ञापन में हरियाणा जागृति मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू ने बताया कि शहर, कस्बा व ग्रामीण इलाकों में पानी की निकासी में प्रशासन पूरी तरह फेल साबित हो रहा है।

पानी की निकासी न होने की वजह से ग्रामीण इलाकों में तीन तीन फुट तक बारिश का पानी जमा है। फसले पानी में डूब चुकी है। कपास,ज्वार व बाजरे की फसल खातमें के कगार पर हैं। अगर अगले एक दो दिनों में पानी की निकासी नहीं हुई तो किसानों को खरीफ की फसलों से हाथ धोना पड़ सकता है। पानी को लेकर चहुंओर हाहाकार मचा है,लेकिन सरकार व प्रशासन के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है।

भिवानी। जलभराव से प्रभावित इलाकों की विशेष गिरदावरी की मांग को लेकर मांगपत्र सौंपते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

प्रति एकड़ 80 हजार रुपये मुआवजा देने की मांग

सरकार की तरफ से अभी तक पानी से बर्बाद फसलों की विशेष गिरदावरी तथा जो मकान बारिश के पानी से डैमेज हुए है। उनकी पहचान करने का कार्य की घोषणा तक भी नहीं हुई है। लगता है सरकार पानी से प्रभावित किसान व अन्य लोगों को कोई मदद नहीं करना चाहती । उन्होंने सीएम को भेजे ज्ञापन में मांग की कि सरकार जल्द ही पानी से प्रभावित इलाकों की विशेष गिरदावरी करवाए और जिन किसानों की फसलें खतम हो गई है। उन किसानों को 80 हजार रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिलाया जाए। इनके अलावा शहर, कस्बा व ग्रामीण इलाकों में बारिश के पानी से जो मकान व निर्माण क्षतिग्रस्त हुए है। उनकी पहचान करके पीड़ितों को निर्माण दोबारा से खड़ा करने के लिए मुआवजा आदि दिलाया जाए। अगर प्रशासन ने बारिश के पानी से प्रभावित लोगों की मदद नहीं की तो वे जल्द ही पहले भिवानी और उसके बाद भी पूरे प्रदेश में आंदोलन का बिगूल बजाने पर मजबूर होंगे। इस मौके पर मनसुख डाबडिया, चुन्नीलाल, सतीश, विकास, नीतिन गुर्जर, अधिवक्ता राजेंद्र सूई, अधिवक्ता शुभम मेहरा मौजूद थे।

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा में बारिश का जमा पानी व निकलते हुए वाहन।

भिवानी-हांसी मुख्य मार्ग पर पानी जमा होने से वाहन चालकों को बढ़ी परेशानी

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा शहर में हो रही मानसूनी बरसात के कारण आने को स्थान पर जल भराव होने से कस्बा वासियों व राहगीरों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं दूसरी ओर भिवानी-हांसी मुख्य मार्ग पर भी पानी जमा होने के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है जानकारी अनुसार हांसी चुंगी के पास लगभग दो से ढाई फीट तक पानी जमा होने के चलते वाहन चालकों में परेशानी हो गई है। वहीं ग्रामीण संजय, विक्रम, प्रमोद, काला, विकास, दीपक, प्रवीण आदि ग्रामीणों ने बताया कि जल निकासी नहीं होने के कारण उन्हें अनेकों प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर मुख्य मार्ग पर पानी जमा होने के चलते वाहन चालकों को भी परेशानी में डाल दिया है वही कस्बा वासियों ने जल्दी ही प्रशासन से जमा हुए बरसाती पानी से निजात दिलाने की मांग की है। वही नपा प्रधान सुंदर अत्री ने बताया कि जहां जल भराव की समस्या है। वहां पंप सेट व ट्रैक्टर आदि का सहारा लिया जा रहा है ताकि जमा हुए पानी को निकाला जा सके। उन्होंने बताया कि धीरे-धीरे पानी की निकासी की जा रही है ताकि आमजन को किसी प्रकार की कोई परेशानी ना हो।

बाढड़ा। एकत्रित लोगों को संबोधित करते एक वक्ता। *फोटो: हरिभूमि*

हर विधानसभा में होंगे आयोजन, 24 से चलेगा भाईचारा सम्मेलनः प्रताप

- समाज को जोड़ने की ऐतिहासिक पहल साबित होगी : श्योराण

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढड़ा

जाट आरक्षण समिति ने एक बार फिर समाज को एकजुट करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। यह बात जाट धर्मशाला गामडी चरखी दादरी में आयोजित कार्यक्रम में समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दहिया ने घोषणा की है कि आगामी 24 अगस्त से पूरे हरियाणा में भाईचारा सम्मेलन की श्रृंखला शुरू की जाएगी।

यह सम्मेलन हर विधानसभा क्षेत्र में आयोजित होंगे और इनका मकसद सामाजिक एकता, सद्भाव और संगठनात्मक मजबूती को बढ़ावा देना है। समिति का यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब समाज में राजनीतिक ध्रुवीकरण और जातीय तनाव बढ़ रहे हैं। स मेलन का उद्देश्य समाज को राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठाकर एकजुट करना है। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष गंगाराम श्योराण ने संबोधित करते हुए कहा कि राजनीतिक लोग समाज को बांटने का काम करते हैं, लेकिन हमें जोड़ने की ज़रूरत है।

समाज की भागीदारी से ही बदलेगा भविष्य

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे फौगाट खाप के अध्यक्ष सुरेश फौगाट ने कहा कि समाज को आगे ले जाने के लिए समाज की ही भागीदारी जरूरी है। हमें किसी एक नेता, पार्टी या संगठन पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। हमारा उद्देश्य है भाईचारे की भावना को फिर से जीवित करना, जिससे समाज का हर वर्ग सशक्त हो सके। इन स6मेलनों के माध्यम से समिति युवाओं, किसानों, महिलाओं और बुद्धिजीवियों से संवाद स्थापित करेगी। हर विधानसभा क्षेत्र में सामाजिक मुद्दों, शिक्षा, रोजगार और आरक्षण जैसे विषयों पर चर्चा होगी। इस अवसर पर धर्मवीर अध्यक्ष जाट धर्मशाला, चरखी दादरी जिला अध्यक्ष सरपंच अजीत सिरसली, भिवानी के जिला अध्यक्ष जौरा सिंह, मास्टर विनोद मांढी,कप्तान भीम सिंह द्वारका, कप्तान हवासिंह डांगी, कुलदीप फौगाट, सरपंच हरिकिशन, वीरेंद्र पहलवान, राजेंद्र सिंह, नरेश आदि मौजूद रहे।

सांसद ने सुनीं लोगों की समस्याएं

- सांसद ने जल्द ही भिवानी से ट्रेनों का संचालन शुरू किए जाने का दिया आश्वासन : नवीन गुप्ता

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

जिला भाजपा कार्यालय में शनिवार को भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद चौ. धर्मबीर सिंह ने लोगों की समस्याएं सुनी। इस दौरान भाजपा जिला कोषाध्यक्ष व फैडरेशन ऑफ भिवानी के अध्यक्ष नवीन कुमार गुप्ता ने भिवानी रेलवे जंक्शन से विभिन्न ट्रेनों का संचालन सुचारू रूप से किए जाने की मांग सांसद के समक्ष रखी, जिस पर सांसद ने सकारात्मक रूख दिखाया। इस मौके पर नवीन गुप्ता ने बताया कि उन्होंने सांसद के समक्ष ट्रेन 09002 जो कि भिवानी से मुंबई से पहले चलती थी, जिसका पुनः शुरू किए जाने, ट्रेन 09007-09008 भिवानी-बोरीवाली को नियमित तौर पर शुरू करने, टेन 12984 चंडीगढ़-अजमेर गरीबरथ का मुबई तक विस्तार किए जाने, ट्रेन 12240 हिसार-बांद्रा का सूरत में ठहराव किए जाने, ट्रेन नंबर-22475 हिसार से कोयंबटूर को भिवानी से शुरू किए जाने, ट्रेन नंबर-22738 हिसार से सिकंदराबाद को भिवानी में शुरू किए जाने, ट्रेन 22916 हिसार से बांद्रा को भिवानी तक विस्तार दिए जाने की मांग रखी। गुप्ता ने कहा कि भिवानी के बहुत से व्यापारियों का सूरत व मुंबई में व्यापार है। जिसके लिए व्यापारी बंधुओं का आना जाना रहता है, उन्हें ट्रेन पकड़ने के लिए हिसार या दिल्ली जाना पड़ता है,सामान साथ होने व परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियो के साथ होने पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ऐसे में यदि इन ट्रेनों का संचालन भिवानी से पुनः होता है तो ना केवल व्यापारी बंधुओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में भी सुधार होगा। नवीन गुप्ता ने बताया कि सांसद चौ. धर्मबीर सिंह ने उनकी मांगों की तरफ सकारात्मक रूख दिखाते हुए आश्वासन दिया कि उनकी जल्द ही रेल मंत्री से मुलाकात होनी है। जो ट्रेन 09002 तथा ट्रेन 09007-09008 जो कि पहले भिवानी से मुंबई के लिए चलती थी, उन्हें पुनः जल्द शुरू करवाया जाएगा।

विधायक ने लोगों संग किया पौधरोपण

- विधायक सांगवान ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत दिलाया संकल्प

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक पेड़ मां के नाम अभियान पूरे देश में चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य हर नागरिक को अपनी मां के नाम पर एक पौधा लगाने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने लोगों से भावी पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुनील सांगवान ने शनिवार को गांव रानीला में स्वामी नितानन्द मिशन फाउंडेशन की ओर से 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत पौधारोपण किया और लोगों के साथ पौधों की देखभाल का संकल्प लिया। साथ ही उन्होंने दूसरों को भी इस अभियान से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह पहल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। यह समाज में प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा। वहीं कहा कि पिछले कई वर्षों से पर्यावरण को स्वच्छ, सुंदर और हरित बनाए रखने की दिशा में महन्त राजेन्द्र दास महाराज द्वारा विभिन्न जिलों में हजारों त्रिवेणी के पौधे लगाकर ऐतिहासिक कार्य किया गया है।

चरखी दादरी। समारोह में विधायक सुनील सांगवान व नित्यानंद। *फोटो: हरिभूमि*

स्वामी नितानन्द मिशन फाउंडेशन लगा रहा पौधे

उन्होंने बताया कि महंत राजेन्द्र दास महाराज ने प्रदेश के तीन जिलों में स्वामी नितानन्द मिशन फाउंडेशन एवं साध संगत के साथ मिलकर विभिन्न गांवों में 3500 पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का विशेष अभियान चलाया है। इस अवसर पर महन्त राजेन्द्र दास महाराज ने पेड़-पौधों को संत की संज्ञा देते हुए कहा कि जैसे संत समाज कल्याण के लिए कार्य करते हैं, वैसे ही पेड़-पौधे दिन-रात हमें शुद्ध वायु, भोजन और छाया प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पेड़-पौधों पर ही निर्भर हैं।

तालु में जलभराव से बीमारियां फैलने की आशंका

- गांव पुर, सिवाड़ा, तालु, कुंगड़, धनाना, बलियाली, जताई, सुई, सुमराखेड़ा सहित दर्जनों गांवों जलभराव की समस्या से जूझ रहे

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

गौ किसान समृद्धि ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं ग्राम स्वराज किसान मोर्चा के संयोजक महेंद्र सिंह गोदारा ने कहा कि बवानीखेड़ा क्षेत्र के गांव पुर, सिवाड़ा, तालु, कुंगड़, धनाना, बलियाली, जताई, सुई, सुमराखेड़ा सहित दर्जनों गांवों के ग्रामीण व किसान इन दिनों जलभराव की समस्या से जूझ रहे है।

जहां पर सरकार व प्रशासन के बरसाती पानी की निकासी के सभी दावे पूरी तरह से फेल हो रहे है। उन्होंने कहा कि गांव तालु का कन्या पाठशाला में पानी भरा है। गांव का जलघर में भी भारी जलभराव है। जिसके समाधान की मांग ग्राम स्वराज किसान मोर्चा के अध्यक्ष जोगेंद्र तालु एवं जिला प्रधान राजसिंह इस मुद्दे को काफी दिनों से गंभीरता से उठाए हुए है, लेकिन इसके बावजूद भी प्रशासन इस दिशा में गंभीरता से कार्य नहीं कर रहा, जिसका खामियाजा प्रत्येक ग्रामीण व किसान को भुगतने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि गांव में पहले से ही कैंसर के बहुत से मरीज है। जलभराव तथा उससे पनपने वाली बीमारियां उनके साथ-साथ अन्य ग्रामीणों के लिए भी जानलेवा साबित हो सकती है।

तोशाम। तालू गांव में रिहायशी क्षेत्र में जमा पानी। *फोटो: हरिभूमि*

सांसद धर्मबीर सिंह का पैतृक गांव है तालु

गोदारा ने बताया कि गांव तालु भाजपा सांसद चौ. धर्मबीर सिंह का पैतृक गांव है, लेकिन इसके बावजूद भी इस गांव में बरसाती पानी निकासी के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे। गौ किसान समृद्धि ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष युद्धबीर मंगल सिंह खरेटा ने कहा कि जिला के बहुत से गांव ऐसे है, जहां पर बरसाती पानी की निकासी के कोई व्यापक प्रबंध नहीं है। जिसके कारण उन गांवों में भारी जलभराव की समस्या बनी हुई है। इससे एक तरफ जहां ग्रामीणों को परेशानी व किसानों को आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है। जलभराव के कारण गांवों में बीमारियां फैलने का भी भय बना है।

बच्चों को स्टेशनरी वितरित की

- प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया विधायक सुधीर शर्मा का जन्मदिन

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

म्हारी संस्कृति म्हारा स्वाभिमान एवं जीवन ज्योति फाउंडेशन, भिवानी द्वारा हिमाचल प्रदेश के पूर्व मंत्री एवं धर्मशाला से विधायक सुधीर शर्मा का जन्मदिन प्रेरणा दिवस के रूप में श्रीराम पाठशाला में बच्चों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों को स्टेशनरी व खाद्य सामग्री वितरित की गई।

इस अवसर पर म्हारी संस्कृति म्हारा स्वाभिमान संगठन के मंच संचालक धर्मवीर नागर ने कहा कि सुधीर शर्मा हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला से पांचवीं बार विधायक बने हैं। वे पूर्व में मंत्री भी रहे हैं। उनके पिता स्व.संत राम शर्मा भी हिमाचल प्रदेश के दिग्गज नेता रहे हैं। सुधीर शर्मा बच्चों व असहाय लोगों को मदद करने में अग्रसर रहते हैं। अपने स्वयं के कोष से न केवल स्कूली बच्चों की सहायता करते हैं बल्कि इन दिनों प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों को भी 84 लाख रुपये की सहायता राशि दी है। श्रीराम पाठशाला प्रबंधन समिति के कोषाध्यक्ष रमेश बंसल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि उन्हें आज बड़ी ही खुशी हुई कि सुधीर शर्मा का जन्मदिन बच्चों के साथ मनाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक खुशी का मौका हमें बच्चों के साथ साझा करना चाहिए। जीवन ज्योति फाउंडेशन के अध्यक्ष सोमवीर शर्मा ने कहा कि विधायक सुधीर शर्मा के जन्मदिन पर हर वर्ष भिवानी में कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। आज स्टेशनरी व खाद्य सामग्री वितरण समारोह आयोजित किया गया।

भिवानी। बच्चों में लेखन सामग्री वितरित करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

पौधों के बिना जीवन अधूराः सतीश

- हर व्यक्ति से अपने जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ के जिला अध्यक्ष सतीश तंवर ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाकर ही पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। उन्होंने हर व्यक्ति से अपने जन्मदिन पर एक एक पौधारोपित करने का आहवान किया। ताकि प्रदेश में हरियाली को गति दी जा सके।

वे आज दुर्गा देवी पब्लिक स्कूल पालवास में संघ की पौधारोपित मुहिम को आगे बढ़ते हुए स्कूल स्टाफ व बच्चों के साथ पौधारोपण किया। साथ ही अन्य शिक्षकों को भी एक एक पौधा लगाने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि पौधारोपण कार्यक्रम को एक मुहिम बनाया जाना चाहिए। सभी लोगों को पौधे लगाने के फायदों की भी जानकारी दी। तभी इस अभियान को मुकाम तक पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्राइवेट स्कूल संघ ने एक लाख पौधे लगाने का जो लक्ष्य रखा गया है भिवानी इकाई के द्वारा लगभग अभी तक 200 पौधों का रोपण किया गया है । इस लक्ष्य को जल्द ही शिक्षकों व बच्चों के सहयोग से पूरा किया जाएगा। उसके बाद प्रदेश में हरियाली को पंख लग जाएंगे।

भिवानी। स्कूल में पौधरोपित करते हुए हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ के जिला अध्यक्ष सतीश तंवर। *फोटो: हरिभूमि*

सौहार्द की भावना को भी बढ़ावा देती हैं प्रतियोगिताएं : बीईओ

खंड स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भीम स्टेडियम में आयोजित करवाए जा रहे दो दिवसीय खंड स्तरीय स्कूली खेल प्रतियोगिता दूसरे दिन शनिवार को उत्साहपूर्वक समापन हो गया। इस दौरान अंडर-11 व अंडर-14 वर्ग की बालिकाओं ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए खेल भावना, अनुशासन और टीम भावना का परिचय देते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया।

प्रतियागिता में दौड़, कबड्डी, खो-खो, लांग जंप, थ्रो बॉल आदि खेलों में बालिकाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन खंड शिक्षा अधिकारी अनिल गौड की देखरेख में किया गया। आयोजन समिति के नोडल अधिकारी प्रवक्ता मदन गोपाल जिम्मेदारी निभाई। वही आयोजन समिति के सदस्यों में प्राचार्य रीमा परमार, सीमा सरदाना, पवन शास्त्री, रविंद्र वैद, अनिता नाथ, सत्यवान कोच, सह प्रभारी विनोद पिंकू रहे।

भिवानी। विजेता प्रतिभागियों के साथ खिलाड़ी। *फोटो: हरिभूमि*

चैस अंडर-11 में लड़कियों में स्नेहा ने मारी बाजी

वही निर्णायक मंडल की भूमिका निभाते हुए सुखदेव रंगा डीपीई, राजेश्वर ढिल्लों, रामचंद्र पूनिया, राजेश परमार कलिंगा, सुनील पीटीआई कोहड़, मोतीलाल जांगड़ा, सरिता डीपीई, राजवंती प्रवक्ता, संजय यादव बापोड़ा, उर्मिला देवी, प्रवीण भारद्वाज, राजेश डीपीई धनाना, नसीब कलिंगा, गजानंद पीटीआई, सुशील दहिया, संजय सैनी, अनीता खेड़ा, शैलेंद्र पीटीआई ने प्रतियोगिता का संचालन व्यवस्थित व सफलतापूर्वक किया। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी भिवानी अनिल गौड ने कहा कि यह प्रतियोगिता न केवल खेल भावना को बढ़ावा देती है, बल्कि छात्राओं को आत्मविश्वास, नेतृत्व और सामाजिकता भी सिखाती है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताए विद्यालयों के बीच आपसी मेल-जोल व सौहादर्य की भावना को बढ़ावा देती है। प्रतियोगिता के सह प्रभारी विनोद पिंकू ने बताया कि चैस अंडर-11 में लड़कियों में प्रथम स्नेहा, द्वितीय केरा, तृतीय अर्पिता, चौथे स्थान अनन्या सोनी, पांचवे स्थान पर दिव्या रही। वही अंडर 14 आयु वर्ग चैस में आरिदिया प्रथम, एंजेल द्वितीय, चारवी तृतीय, हर्षिता चौथे और योगिता पांचवें स्थान पर रही। अंडर 14 राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय धनाना प्रथम, हलवासिया विद्या विहार भिवानी द्वितीय, राजकीय उच्च विद्यालय अमरावत तृतीय स्थान पर रही।

खबर संक्षेप

इनसो स्थापना दिवस पर देशभक्ति कार्यक्रम 5 को

बाढड़ा। आगामी पांच अगस्त को इनसो स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बेरला गांव में पौधरोपण के साथ एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

पार्टी के हल्का अध्यक्ष विजय श्योराण काकड़ोली ने जानकारी देते हुए बताया कि पौधरोपण कार्यक्रम के साथ -साथ श्योराण खाप पच्चीस के बड़े गांव बेरला में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

अध्यापक करवाते हैं छात्र के स्तर से अवगत : प्रमोद

तोशाम। शनिवार को गांव बुशाण के बाबा मुंगीपा विद्यापीठ वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अभिभावक अध्यापक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों के अनेक अभिभावकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस दौरान अभिभावकों ने अध्यापकों से मिलकर विद्यार्थियों की बारीकी से जानकारी ली। प्राचार्य प्रमोद दीक्षित ने कहा कि अभिभावक अध्यापक बैठक समय-समय पर होना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि अध्यापक अभिभावक को विद्यार्थी के स्तर से अवगत करवाते हैं।

पांच दिवसीय स्कूली खेल प्रतियोगिता शुरू

लोहारू। खंड शिक्षा अधिकारी विजय प्रभा ने कहा कि खेलों से मनुष्य का शारीरिक ही नही बल्कि मानसिक विकास भी होता है। वर्तमान में खेलों के माध्यम से खिलाड़ियों ने अपने परिवार, गांव और इलाके का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन किया है। वे स्थानीय चौ देवीलाल खेल स्टेडियम में आयोजित खंड स्तर की पांच दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ करने के बाद खिलाड़ियों को संबोधित कर रही थी।

एसओपी जारी होने से कच्चे कर्मचारियों में खुशी

बवानीखेड़ा। गत दिवस राज्य के मुख्यमंत्री ने 120000 कच्चे कर्मचारियों की नौकरी पक्के करने की घोषणा करने के बाद क्षेत्र के दक्षिणी हरियाणा बिजली वितरण निगम में कार्यरत अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ ने मिठाई बाटकर राज्य सरकार के मुख्यमंत्री नायब सैनी व हलका विधायक कपूर वाल्मीकि का आभार व्यक्त किया है। सब यूनिट प्रधान नरेश कुमार ने बताया कि राज्य सरकार ने कच्चे कर्मचारियों की 58 साल तक नौकरी पक्की करने का जो काम किया है ।

3 पिस्तौल व 24 कारतूस बरामद, दो आरोपी काबू

चरखी दादरी। दादरी स्पेशल स्टाफ पुलिस टीम ने 3 पिस्तौल व 24 कारतूसों के साथ 2 युवकों को काबू किया है। सीआईए स्टाफ की एक टीम हेड कांस्टेबल विकास के नेतृत्व में महेंद्रगढ़ चौक पर गस्त पर तैनात थे। टीम को सूचना मिली कि भैरवी से घसोला रोड पर दो युवक अवैध हथियार लिए हुए किसी के इंतजार में खड़े हुए हैं। जो किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने की फिराक में है। सूचना मिलते ही पुलिस ने भैरवी रोड पर दबिश दी।

सीटू ने एसडीएम के माध्यम से श्रम मंत्री को ज्ञापन भेजा

श्रमिकों ने रोष मार्च निकाल कर श्रम विरोधी नीतियों के खिलाफ हुंकार भरी

अनाज मंडी में निर्माण मजदूरों की मांगों को लेकर रोष प्रदर्शन का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढड़ा

बाढड़ा। मांगों को लेकर अधिकारी को मांगपत्र सौंपते हुए।

प्रदेश सरकार की श्रम विरोधी नीतियों के विरोध में सीटू, कामगार निर्माण संगठन की अगुवाई में उपमंडल के श्रमिकों ने रोष मार्च निकाला और उपमंडल कार्यालय पहुंच कर एसडीएम के माध्यम से श्रममंत्री को मांगों का ज्ञापन भेजा।

श्रमिकों के समर्थन में पहुंचे पूर्व विधायक सोमवीर सिंह, राजू मान, छात्र संघ अध्यक्ष विजय मोटू, कामरेड ओमप्रकाश, कामरेड सुखबीर सिंह आदि ने पहुंच कर समर्थन करते हुए सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। कस्बे कि आनज मंडी में निर्माण मजदूरों की मांगों को लेकर रोष प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता खंड प्रधान भूप सिंह नांधा ने की तथा संचालन जिला संयोजक सुमेर सिंह ने किया। रोष रैली के बाद श्रमिकों ने अनाज मंडी से नारा लगाते हुए जुलूस निकालकर एसडीम कार्यालय पहुंचकर श्रम मंत्री को ज्ञापन सौंपा। रोष रैली को संबोधित करते हुए यूनियन के राज्य महासचिव कामरेड सुखबीर सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार ने बोर्ड में फैले भ्रष्टाचार का हवाला देकर बोर्ड के सभी ऑनलाईन काम बंद कर दिये हैं जिसके चलते पिछले दो माह से पास हुए सुविधा फार्मो की राशि को भी सत्यापन के नाम पर रोक दिया गया है। इससे ऐसा लगता है कि सरकार निर्माण मजदूर कारीगरों के लंबे संघर्ष के दम पर बनवाये गए श्रम कल्याण बोर्ड को ही बंद करना चाहती है। बोर्ड का पोर्टल बन्द होने के चलते ना केवल सुविधाओं पर रोक लग गयी है बल्कि नया पंजीकरण भी बन्द हो गया है। प्रदेश की भाजपा सरकार अपने चहेते दलालों एवं भ्रष्ट अधिकारियों को बचाने के लिए श्रमिकों को बलि का बकरा बना रही है। जब सरकार ने 2018 में बोर्ड में तमाम कार्यो को ऑनलाइन किया था तभी यूनियन ने आगाह किया था कि इससे बोर्ड में भ्रष्टाचार बढ़ेगा व सरकार धीरे-धीरे बोर्ड को खत्म कर देगी। उसके बाद से ही वर्क सत्यापन, परिवार पहचान पत्र इत्यादि की बेमानी शर्तो के चलते बोर्ड भ्रष्ट अधिकारियों व दलालों के चंगुल में फंसता चला गया। यूनियन द्वारा लगातार संघर्ष के दौरान भ्रष्ट अधिकारियों व दलालों पर शिकंजा कसने की मांग की गई थी मगर सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया क्योंकि इसमें ज्यादातर लोग सरकार के ही हैं। अब बीजेपी सरकार ने भ्रष्टाचार का हवाला देकर निर्माण मजदूर-कारीगरों के हकों पर ही कुठाराघात करते हुए बोर्ड के सभी कार्यों को बन्द कर दिया है जिस कारण प्रदेश के 10 लाख निर्माण मजदूर मिलने वाली सुविधाओं से वंचित हो गए हैं। सरकार की मनमानी के विरोध में निर्माण मजदूर सरकार के खिलाफ भारी गुस्से और आक्रोश में हैं और आने वाली 14 सितंबर को हजारों निर्माण मजदूर बड़ी संख्या श्रम मंत्री अनिल विज के आवास पर प्रदर्शन करेंगे जिसकी तैयारियों के लिए यूनियन के नेता व कार्यकर्ता गांव व शहर के मोहल्लों में बैठके कर रहे हैं।

इस रोष प्रदर्शन में निर्माण श्रमिकों के समर्थन में सीपीएम नेता कामरेड ओमप्रकाश, कांग्रेस पार्टी के पूर्व विधायक सोमबीर श्योराण, कांग्रेस के युवा नेता राजू मान, श्योराण खाप के प्रधान बिजेंदर बेरला, पूर्व चेयरमैन सुरेश मान, रामअवतार बाढड़ा, सत्यपाल आर्यनगर, किसान सभा के नेता रणधीर कर्मचारी नेता कामरेड सुखदेव पालुवास, सीटू जिला प्रधान कमलेश भैरवी, सीटू जिला कोषाध्यक्ष राजकुमार धिकाडा रोशन लाल, कामरेड रामपाल धारनी, भूप सिंह धारणी, ब्रह्मपाल बाढडा, राजकुमार हडोदी, सुमेर सिंह भांडवा, हवासिंह प्राचार्य, कर्मचारी महेंद्र सिंह पंचगांव, शीशराम जगरामबास, रामरती, संतोष, रोशनी, सुनीता आदि मौजूद रहे।

सभी मांगों को तत्काल पूरा करे सरकार

पूर्व विधायक व वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सोमवीर सिंह ने कहा कि सरकार को श्रमिकों की सभी मांगे जिनमें बंद किए गए पंजीकरण दोबारा से खोले जाए, रोकी गई सुविधा राशि जारी करवाई जाए, बोर्ड में कर्मचारी और अधिकारियों की भर्ती करके बोर्ड का स्वतंत्र ढांचा खड़ा किया जाए, 90 दिन के काम के सत्यापन का अधिकारी यूनियनों को दिया जाए, बेईमानी शर्तें लगाकर रद्द किए गए लाभ के आवेदनों को बहाल करके मजदूरों को उनका लाभ दिया जाए, परिवार पहचान पत्र के नाम पर मजदूरों को प्रताड़ित करना बंद किया जाए, शिविर लगाकर प्रवासी मजदूरों सहित सभी मजदूरों का पंजीकरण किया जाए, जिला स्त्र पर वेरिफिकेशन के लिए यूनियनों के प्रतिनिधि शामिल किया जाए।

बाढड़ा। मांगों को लेकर आयोजित धरने को संबोधित करते हुए।

किसान 18वें दिन भी सरकार के खिलाफ धरनारत रहे

■ खरीफ 2025 के लंबित मुआवजा देने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढड़ा

खरीफ 2025 के लंबित मुआवजे के लिए संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर के नीचे आज 18 वें दिन भी क्षेत्र के किसान धरनारत रहे।

किसानों ने सरकार द्वारा सुनवाई न करने पर रोष प्रकट करते हुए जल्द ही बड़ा आंदोलन शुरु करने का फैसला लिया। कस्बे के जुई रोड़ स्थित अनाज मंडी परिसर में इनेलो नेता राम अवतार बाढड़ा की अध्यक्षता में संचालित धरने को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक व वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सोमवीर श्योराण ने कहा कि कांग्रेस पार्टी किसानों, बेरोजगारों के हितों से खिलवाड़ कर रही है। भाजपा सरकार के 11 साल में हमारे क्षेत्र के गरीब किसान, मजूदर व्यपारी, कर्मचारियों के हितों से खिलवाड़ किया गया है। सरकार व बीमा कंपनियां आपसी मिलीभगत कर किसानों को मुआवजा दे रही है और ना ही मौजूदा रबी सीजन का ओलावृष्टि प्रभावित किसानों को मुआवजा दे रही है। सीएम केवल दिखावे की बैठक तो कर रहे हैं लेकिन धरातल पर कुछ असर नहीं दिखा। कृषि क्षेत्र में खाद बीज की किल्लत पैदा कर व किसानों की संतान को आगे बढने के लिए शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है। सोलर कैनेक्शन एक वैकल्पिक सुविधा के तौर पर दी गई थी लेकिन अब सरकार उनको जानबूझ कर ट्यूबवैल कैनेक्शन देने से वंचित रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा केवल पंजीपति व्यवस्था लागू करना चाहती है वहीं जवान व किसान की उपेक्षा करना सरकार को भारी पड़ेगा। केन्द्र व प्रदेश सरकार किसानों व श्रमिकों के हितों से खिलवाड़ कर रही है जो किसी सूरत में न्यायसंगत नहीं है। किसान सभा नेता रामपाल धारणी ने कहा कि चुनाव में बड़े -बड़े दावे करने वाले सांसद धर्मबीर सिंह, किरण चौधरी, कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी व अन्य विधायक किसान की आवाज सुनने तक नहीं आ रहे है जिससे खिलाफ अब लोगों में रोष बना हुआ है। जिले के सत्तासीन जनप्रतिनिधियों की मदद के बिना कंपनी इतना बड़ा गोलमाल करना संभव नहीं है।

युवाओं को राष्ट्रहित व सामाजिक कार्यों से जोड़ना था कार्यक्रम का उद्देश्य : चरणदास

■ हनुमान जोहड़ी मंदिर परिसर में पौधे रोपित किए गए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। हनुमान जोहड़ी मंदिर परिसर में पौधे रोपित करते हुए।

हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर में युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरूआत शहीद उधम सिंह के बलिदान दिवस और गोस्वामी तुलसीदास की जयंती पर हुआ था।

शनिवार को हवन, राष्ट्रभक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम, पौधारोपण व नशा मुक्त जागरूकता संकल्प कार्यक्रम के साथ संपन्न हुआ। यह जानकारी देते हुए पुजारी ध्यानदास व समाजसेवी रमेश सैनी ने बताया कि बालयोगी महंत चरणदास के सान्निध्य में आयोजित हुए तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन पर शनिवार को बतौर मुख्यअतिथि पूर्व मंत्री एवं विधायक संजय सिंह ने शिरकत की तथा उपस्थित लोगों को नशे से दूर रहने और दूसरों को भी प्रेरित करने की शपथ दिलाई। उन्होंने नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करते हुए एक स्वस्थ और सकारात्मक जीवन जीने का संदेश दिया।

सीएचसी के स्टाफ पर लगाए आरोप, कार्रवाई करने की मांग

लोहारू। लोहारू समस्या समाधान सामाजिक संगठन के प्रदीप सैनी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को शिकायत भेजकर लोहारू सीएचसी के स्टाफ पर आरोप लगाए तथा कार्रवाई की मांग की है।

प्रदीप सैनी ने आरोप लगाया है कि वह अपनी गर्भवती पत्नी को नियमित जांच के लिए लोहारू सीएचसी ले गया था। इस दौरान स्टाफ के स्टाफ सदस्यों ने समुचित उपचार देने की बजाए उनके साथ उचित व्यवहार तक नही किया। सीएचसी में सिजेरियन डिलीवरी की सुविधा भी शुरू की थी लेकिन पत्नी को अल्ट्रासाउंड की सलाह दी गई जबकि उसने पहले ही अल्ट्रासाउंड करा रखा था।

दिव्या ने हॉकी प्रतियोगिता में जीता गोल्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छात्रा दिव्या ने प्रतिभा और दृढ़ संकल्प से उपलब्धि हासिल करने का पेश किया उदाहरण : प्राचार्या सुमन

भिवानी। प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए।

हाल ही में जयपुर में आयोजित हुए चौथे राष्ट्रीय युवा खेलों में महम गेट स्थित श्रीहरियाणा शेखावाटी ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय की छात्रा दिव्या शर्मा ने हॉकी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर एक शानदार उपलब्धि हासिल की है। उनकी इस जीत ने न केवल उनके विद्यालय और जिले का नाम पूरे देश में रोशन किया है, बल्कि यह अन्य युवा खिलाड़ियों के लिए भी एक प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

महाविद्यालय खेल संयोजक एवं संस्कृत प्रवक्ता सुनील शास्त्री ने बताया कि दिव्या की इस अद्भुत उपलब्धिमहाविद्यालय में शनिवार को उनका स्वागत किया गया। सुनील शास्त्री ने कहा कि छात्रा दिव्या ने अपनी मेहनत एवं प्रतिभा के बल पर जो उपलब्धि हासिल की है, उससे ना केवल महाविद्यालय स्टाफ सदस्य व विद्यार्थी, बल्कि जिला के समस्त नागरिक गौरवांवित हुए है। प्राचार्या सुमन शर्मा ने दिव्या की कड़ी मेहनत और समर्पण की सराहना की। दिव्या की सफलता एक बेहतरीन उदाहरण है कि कैसे एक लडक़ी अपनी प्रतिभा और दृढ़ संकल्प से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना सकती है। इस अवसर पर हिमांशु सेमवाल, प्रतिभा शर्मा, ललिता शर्मा, मीरा शर्मा, पवन शर्मा, पारूल, अंजू शर्मा, रीतू शर्मा, राहुल यादव, आदि मौजूद रहे।

माता की प्रेरणा से जरूरतमंद मरीज का जीवन बचाने के लिए आगे आया अजय

भिवानी। गांव रिवाड़ीखेड़ा निवासी 28 वर्षीय अजय ने ने हाल ही में पहली बार रक्तदान किया और उनकी यह कहानी कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। उन्होंने यह निर्णय अपनी मां सुशीला से प्रेरित होकर लिया, जिन्होंने उन्हें दूसरों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित किया। जानकारी के अनुसार अजय की माता सुशीला को पता चला कि भिवानी में एक जरूरतमंद मरीज को तत्काल रक्त की आवश्यकता है। यह जानकर उन्होंने अपने पुत्र अजय को आगे बढ़कर रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। जिसके बाद अजय ने फ्रीडम ब्लड बैंक में पहुंचकर रक्तदान किया। इस मौके पर समाजसेवा के प्रति अनूठी सोच रखने वाले रक्तदाता अजय व उनकी माता को पालेराम चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक सुरेंद्र संभ्रवाल ने फ्रीडम ब्लड बैंक में जाकर सम्मानित किया और समाज के अन्य युवाओं को भी रक्तदान के लिए प्रेरित होने का आह्वान किया। सुरेंद्र संभ्रवाल ने कहा कि रक्तदान महादान है।

लिटिल हार्टस के प्रांगण में नन्हे-मुन्नों ने दिए देशभक्ति व स्वास्थ्य संबंधी संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न मुद्राओं में बालक।

लिटल हार्टस कॉनवेन्ट स्कूल के प्रांगण में आज एल.के.जी. के बच्चों की हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिनमें हमारे देश की संस्कृति, देशभक्ति व स्वास्थय व खान-पान को ध्यान में रखने वाले विषय प्रमुख थे।

विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एम.डी. पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि विद्यालय द्वारा आयोजित गतिविधियों की श्रृंखला में आज एल.के.जी. के चार विभागों रोज, लोटस, लिली, जसमिन की हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जो जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह से बढ़-चढ़ कर भाग लिया। विद्यार्थियों ने हमारे देश की संस्कृति, हरियाली तीज, देशभक्ति, स्वास्थय, खान-पान, जीव-जन्तुओं व पक्षियों से प्रेम आदि विषयों को प्रकाशित करते हुए चिड़िया का संसार, सूरज भैया, आई तीज, समय की कीमत, पेड़ लगाओ, बारिश, मेरा बस्ता, इन्द्रधनुष, तितली, आहा टमाटर, बिल्ली मौसी, देशभक्ति, सैनिक आदि विषयों पर अत्यंत मनमोहक व एक से बढ़कर एक कविताएँ सुना कर सबका मन मोह लिया।

ऑकवुड स्कूल के विद्यार्थियों ने बैंकिंग ज्ञान की ओर बढ़ाया कदम, फेडरल बैंक का किया भ्रमण

भिवानी। दि आकवुड स्कूल के कक्षा छह से 10वीं तक के सभी विद्यार्थियों ने शनिवार को अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में भिवानी के फेडरल बैंक का शैक्षिक भ्रमण किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को बैंकिंग प्रणाली, डिजिटल सेवाओं एवं वित्तीय साक्षरता के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना था। विद्यालय प्राचार्य सज्जन भारद्वाज ने विद्यार्थियों के दल को रवाना किया। भ्रमण के दौरान बैंक मैनेजर उत्कर्ष दुबे तथा उनके सहयोगी समीर ने विद्यार्थियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें एटीएम की कार्यप्रणाली, इसके सुरक्षित उपयोग के उपाय, तथा बैंक की लॉकर सुविधा की उपयोगिता, बैंक मे खाता खोलने, बैंक खाते से जुड़ी सुविधाओं तथा असली व नकली करंसी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न प्रश्न पूछे जिनका अधिकारियों ने सहज और स्पष्ट उत्तर दिया। बैंक के विभिन्न विभागों का प्रत्यक्ष अवलोकन कर डिजिटल बैंकिंग, पासबुक प्रिंटिंग, ग्राहक सेवा और वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के बारे में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया।

कार्यक्रम दादरी में पीएम किसान सम्मान निधि को लेकर कार्यक्रम आयोजित

सुरक्षित भविष्य के लिए बदलें खेती के तरीके : धर्मबीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी। किसानों को संबोधित करते सांसद धर्मबीर सिंह।

भविष्य को सुरक्षित करने के लिए खेती करने के तरीकों में बदलाव करना बेहद जरूरी है। कीटनाशकों के प्रयोग के चलते हमने मिट्टी की उत्पादन क्षमता को खराब कर लिया है। जमीन में पानी जाने वाले छेद बंद हो गए हैं। यही नहीं अब फसलों में कीटनाशकों के छिड़काव से कारण बीमारियां भी होने लगी हैं। अगर अभी नहीं संभले तो देर हो जाएगी।

यह बात लोकसभा सांसद धर्मबीर सिंह ने दादरी में पीएम किसान सम्मान निधि को लेकर आयोजित कार्यक्रम में कही। सांसद ने मौजूदा खेती के तौर तरीकों पर गंभीरता जाहिर करते हुए कहा कि अब खेती में जरूरत से कई गुना कीटनाशकों का प्रयोग होने लगा है। एक दूसरे को देखकर जहां 50 किलो यूरिया डालनी चाहिए वहां कई क्विंटल डालते हैं। हमारा क्षेत्र धान की फसल के लिए नहीं है। फिर भी हजारों एकड़ धान उगाई जा रही है। सबको पता है धान में सबसे अधिक कीटनाशक का प्रयोग होता है और फिर उसमें ताजा पानी चाहिए। ज्यादा पानी होने पर नहरों में डाल देते हैं, जो पीने के पानी में मिलता है। कहीं ना कहीं हम सब जहर पी रहे हैं। अगर खेती के तरीकों को नहीं बदला गया तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। उन्होंने कहा कि मौसम पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पिछले कुछ सालों के दौरान दक्षिण पश्चिम मानसून ने रास्ता बदला है। सबको याद है पहले सावन के महीने में हर रोज बारिश की झड़ी लगती थी। छोटी छोटी बूंदे होती थी। अब मोटी बूंदों वाली बारिश आती है। अब पलवल, नूह, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, दादरी व लोहारू जैसे क्षेत्रों में ज्यादा बारिश होती है और मध्य हरियाणा में कम। उन्होंने कहा कि दादरी के क्षेत्र में साढ़े तीन हजार साल पहले इसी तरह से पहले मानसून ने रास्ता बदला था तो अगले 700 साल यहां बूंद नहीं पड़ी। अब सामाजिक तौर पर फैसले लेने का समय है। उन्होंने कहा कि सरकार हर क्षेत्र के लोगों को सुविधाएं दे रही है। किसान सम्मान निधि, बुढ़ापा पेंशन और कुछ दिनों बाद महिलाओं को 2100 रूपये मिलेंगे। हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किए जा रहे हैं। पहले किसी ने नहीं सोचा कि जरूरतमंदों की सहायता की जाए।

स्कूल, पीएचसी, पशु अस्पताल परिसरों में जमा बारिश के पानी की निकासी जल्द हो : धर्मबीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

सांसद धर्मबीर सिंह ने बारिश के मद्देनजर अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

■ नागरिकों को परेशानी का सामना ना करना पड़े : सांसद

भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद चौ.धर्मबीर सिंह ने सिंचाई विभाग, पंचायत विभाग, जनस्वास्थ्य विभाग और बिजली निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे बारिश के दौरान जिला के विभिन्न ग्रामीण और शहरी इलाकों में बनी जलभराव की स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाएं ताकि नागरिकों को परेशानी का सामना ना करना पड़े।

सिंचाई, जन स्वास्थ्य, नगर परिषद और शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि मौसम विभाग के अनुसार इस साल सितंबर तक भी अच्छी खासी बारिश का अनुमान है। ऐसे में विभाग योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते हुए प्रबंध करे। जिला के जिन स्कूल में पानी भरा है उसको तुरंत निकला जाए और अगर किसी घटना का अंदेशा है तो पानी निकासी तक दूसरी जगह क्लास लगाई जाएं।

उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जर्जर घोषित हो चुके स्कूल भवनों में कक्षाएं ना लगाएं, कक्षाओं के लिए ग्राम पंचायत के सहयोग से गांव में अन्य कोई उपयुक्त जगहों का चयन करें। सांसद शनिवार को लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए सभागार में बारिश के मद्देनजर पानी निकासी को लेकर अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे रहे थे। इस दौरान उपायुक्त साहिल गुप्ता भी मौजूद रहे। बारिश के दौरान जलघरों में गंदा पानी नही जाना चाहिए। लोगों को स्वच्छ पेयजल मिलना चाहिए। गंदे पानी से लोगों का बीमार होना स्वाभाविक है, ऐसे में लोगों का जीवन भी सुरक्षित रखना जरूरी है। उन्होंने सिंचाई और पंचायत विभाग के अधिकारियों से जिला में जलभराव वाले क्षेत्रों में बारिश के पानी की स्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने पानी निकासी को लेकर अब तक किए गए प्रबंधों के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि पानी निकासी का वैकल्पिक प्रबंध जरूरी है। सांसद ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे निचले इलाकों में जमा बारिश के पानी को ऊंचाई वाले जरूरतमंद गांवों में पहुंचाने के लिए उचित प्रबंध करें।

देश के पूर्वोत्तर राज्य मेघालय की राजधानी शिलांग के उत्तर-पूर्व में खासी पहाड़ियों के बीच बसा मॉसिनराम गांव विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान के रूप में जाना जाता है। साल में लगभग आठ महीने बारिश से भीगने वाले इस गांव की अनेक विशेषताएं इसे दुनिया में अलग पहचान प्रदान करती हैं। क्यों होती है यहां इतनी बारिश, कैसे रहते हैं स्थानीय लोग वहां, विस्तार से जानिए।

टूरिस्ट स्पॉट / वीना गौतम

बादलों और बारिश का बसेरा
मॉसिनराम गांव

चाहे कोई शहर हो, कस्बा हो या फिर गांव, हर जगह की अपनी एक निजी पहचान, कुछ अलग विशेषता होती है। यही विशेषता उस स्थान विशेष को एक लैंडमार्क के रूप में स्थापित करती है। भारत में ऐसा ही एक स्थान है, मेघालय की राजधानी शिलांग में स्थित मॉसिनराम गांव।

सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान

आज से कुछ दशक पूर्व तक चेरापूंजी विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान के रूप में जाना जाता था। लेकिन अब मॉसिनराम को सर्वधिक वर्षा वाले स्थान का खिताब प्राप्त है। दरअसल, 1973 से 2019 के बीच मौसम विज्ञान के डेटा के मुताबिक चेरापूंजी में मॉसिनराम से 0.42 मिलीलीटर कम बारिश होने लगी थी। इस अंतर को देखते हुए सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान का जो ताज चेरापूंजी के सिर पर हुआ करता था, वह मॉसिनराम नामक गांव के सिर पर सज गया।

इसलिए होती है सर्वाधिक बारिश

सवाल है आखिर मॉसिनराम में दुनिया की सबसे ज्यादा बारिश कैसे होती है? जबकि दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश वाली जगहें आमतौर पर भूमध्य रेखा के आस-पास होती हैं। दुनिया में भौगोलिक रूप से देखा जाए तो सबसे ज्यादा बारिश दक्षिण अमेरिका, मध्य-पश्चिमी अफ्रीकी देशों और कुछ दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में होती है। फिर मॉसिनराम ने दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश की बाजी कैसे मार ली? इसका जवाब है कि आमतौर पर मई से सितंबर तक यहां जो बारिश होती है, उसका सबसे बड़ा कारण इस गांव की अपनी खास भौगोलिक स्थिति है। शिलांग से लगभग 60 से 65 किलोमीटर दूर उत्तर पूर्वी दिशा में खासी पहाड़ियों के बीच बसा यह गांव अपनी विशेष स्थिति के कारण दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान पानी से भरी बदलियों का डेरा बन जाता है। खासी पहाड़ियों की खास स्थिति इन पानी से भरी बदलियों को आवभगत के लिए रोकती है और ठीक तभी बंगाल की खाड़ी से आने वाली गर्म और नम हवाएं इन्हें यहां झूमकर बरस जाने के लिए मजबूर कर देती हैं। 1491 मीटर ऊंची खासी पहाड़ियों के कारण ही इन बादलों की नमी संघनित होकर बारिश में बदल जाती है।

बांस के छाते से खुद को भीगने से बचाते स्थानीय लोग

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र

हर वर्ष मई से सितंबर तक यहां प्रायः हर रोज कम से कम एक बार तो झूमकर बादल बरसते ही हैं। यही नहीं ये बादल दिन के ज्यादातर समय यहां डेरा डाले रहते हैं। पहले देश-विदेश के लोग चेरापूंजी इसलिए घूमने जाया करते थे कि यह भारत और दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश वाली जगह थी, उसी तरह अब लोग मॉसिनराम जाते हैं। पर्यटकों की वजह से यहां के लोगों के आय का स्रोत भी थोड़ा बढ़ा है। चेरापूंजी के सिर से हालांकि सर्वाधिक बारिश वाला ताज तो इसके पड़ोसी मॉसिनराम ने छीन लिया, लेकिन आज भी चेरापूंजी दुनिया में दूसरे नंबर के सबसे ज्यादा बारिश वाली जगह बनी हुई है। मॉसिनराम का मौसम सालभर ठंडा और ह्यूमिड यानी नमी वाला रहता है। हां, इसके बावजूद यह जगह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए पर्यटकों को आकर्षित करती है। यही कारण है कि शिलांग या चेरापूंजी घूमने का कार्यक्रम बनाने वाले लोग अब मॉसिनराम को भी अपने पर्यटन शिड्यूल शामिल करते हैं। क्योंकि यह भारत के नक्शे में एक विशिष्ट लैंडमार्क है।

ये खूबियां बनाती हैं खास

इस गांव की अपनी कई और खूबियां भी हैं। हर समय बारिश होने के कारण यहां पानी में उगने वाली कई पत्तेदार सब्जियां खूब मिलती हैं। कई तरह के मौसमी फल भी यहां खूब मिलते हैं। पानी भरपूर होने के कारण मछलियां भी खूब पाई जाती हैं। देश के दूसरे हिस्सों में जब बारिश होती है तो आमतौर पर जनजीवन ठहर सा जाता है। लेकिन मॉसिनराम गांव में ऐसा नहीं होता। यहां के लोग बारिश के बीच चलते-फिरते और घूमते रहते हैं। यहां के बाशिंदे बारिश के समय भीगने से बचने के लिए खास तरह के बांस के बने छातों का इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें कनूप कहते हैं। यह कनूप सिर्फ यहां की ही नहीं चेरापूंजी की भी पहचान है। दरअसल, इससे यहां के लोगों का कमर तक शरीर ढका रहता है और वे अपने सारे काम करते रहते हैं।

दुनिया का सर्वाधिक नम स्थान भी है मॉसिनराम

इसके नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

मॉसिनराम के पास दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड है। यहां पूरे साल में करीब 6 से 8 महीने लगभग हर दिन एक बार बारिश होती है और यहां देश के किसी भी बाकी हिस्से से लगभग 10 गुना ज्यादा बारिश होती है। एक साल में लगभग 11,871 मिलीमीटर। इतनी ज्यादा बारिश दुनिया में और कहीं नहीं होती। मॉसिनराम गांव, दुनिया में सबसे गीली जगह भी है। यहां पर 'वेटेस्ट प्लेस ऑफ अर्थ' का साइन बोर्ड भी लगा हुआ है।

हालांकि मॉसिनराम के दावे को चुनौती देने के लिए कुछ सालों पहले कंबोडिया के एक शहर यूरो ने दावा किया था कि उसके यहां साल में 12,717 मिलीलीटर बारिश होती है, लेकिन जब गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा उसके दावे की जांच की गई, तो यह गलत पाया गया। माना गया कि शायद बारिश को नापने का उसका पैमाना, पुराना और पारंपरिक है, जिससे उनसे यह गलतफहमी हुई। *

वास्तव में जीरो नहीं होता है
लोन पर जीरो इंटरेस्ट

आकर्षक डिस्काउंट, जीरो इंटरेस्ट पर लोन जैसे प्रलोभनों के जाल में अकसर लोग फंस जाते हैं। इन ऑफर्स या लोन पर सामान खरीदना क्या वास्तव में फायदेमंद होता है? इसकी हकीकत आपको पता होनी चाहिए।

मनी मैटर्स
शिखर चंद जैन

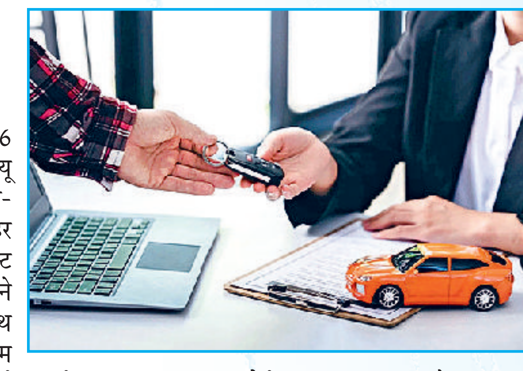

चाहे 15 अगस्त हो या 26 जनवरी, क्रिसमस हो या न्यू ईयर, वैलेंटाइन-डे हो, वूमेंस-डे हो, दीपावली हो या होली, प्रायः हर फेस्टिवल, खास ऑकेजन पर प्रोडक्ट निर्माता कंपनियां अपने ग्राहकों को लुभाने के लिए तरह-तरह के ऑफर्स देती हैं। साथ ही कई डीलर या उनके साथ मिलकर काम करने वाले फाइनेंसर 'जीरो इंटरेस्ट' ईएमआई पर घरेलू उपकरण देने की पेशकश भी करते हैं। अकसर ग्राहक ऑफर्स के ऐसे भ्रम जाल में फंस जाते हैं।

जीरो इंटरेस्ट का फंडा: ईएमआई या लोन पर घरेलू सामान या मशीनरी की खरीद करते समय अच्छी तरह जान लें कि डीलर या फाइनेंसर मुफ्त समाज सेवा करने के लिए नहीं बैठा है। वे अपनी रकम के बदले ब्याज वसूल करते हैं। जीरो इंटरेस्ट के पीछे एक चतुराई भरा हिसाब-किताब होता है। पहली बात, नकद खरीद में एकमुश्त पैसा देकर खरीदने पर इलेक्ट्रिक आइटमों पर काफी डिस्काउंट दिया जाता है, जो ब्रांड और सामान की क्वालिटी पर निर्भर करता है। कई बार तो यह एमआरपी पर 40 फीसदी तक भी हो सकता है। लेकिन जब आप किश्तों पर सामान खरीदते हैं, तो सारा हिसाब-किताब एमआरपी के हिसाब से ही किया जाता है। मामूली डिस्काउंट दे भी दिया जाए, तो एडमिनिस्ट्रेशन या सर्विस चार्ज के नाम पर आपसे वसूली कर ली जाती है। साथ ही आप खरीददारी के वक्त जो डाउन पेमेंट देते हैं, वो हाथों-हाथ देने के बावजूद उस पर भी ब्याज जोड़ लिया जाता है। याद रखें, 'जीरो इंटरेस्ट' का ऑफर, प्रायः प्रोडक्ट की सेल बढ़ाने का मात्र एक तरीका होता है। सच तो यह है कि ज्यादातर फाइनेंस करने वाला, लोन की रकम पर पूरा ब्याज वसूलता है। लोन पर या किश्तों पर घरेलू उपकरण खरीदना अधिकांश मामलों में घाटे का सौदा ही होता है।

ऐसे भी मिल सकता है डिस्काउंट: कई बार डीलर आपको काफी डिस्काउंट और बहुत कम एडमिनिस्ट्रेटिव फीस में भी ईजी इंस्टॉलमेंट पर सामान देने के लिए तैयार हो जाता है। ऐसा करने के पीछे कुछ कारण होते हैं। जैसे- सामान को स्टॉक में रखने और हैंडल करने की बजाय बेचने में लाभ, वैसे गैजेट्स या उपकरण का कोई नया मॉडल बाजार में आ चुका हो या आने वाला हो, जिससे उसकी मांग में गिरावट आ सकती हो, काफी दिनों से स्टॉक में रहने के बावजूद उस मॉडल की बाजार में खास मांग न आ रही हो। इन स्थितियों में उपकरण की लाइफलाइन बहुत कम हो जाती है और रीसेल वैल्यू भी गिर जाती है। इसलिए प्रोडक्ट की पूरी जानकारी लेकर ही उसे खरीदें।

इन बातों पर विचार कर लें: अगर आपको लोन या किश्तों पर सामान खरीदना ही हो, तो डीलर से कंज्यूमर लोन लेने की बजाय दूसरे विकल्पों पर विचार करके देखें। अगर आपके अपने बैंक डिपॉजिट पर कम ब्याज दर पर लोन मिल रहा हो या उससे कम ब्याज दर पर पर्सनल लोन मिल रहा हो, तो उस पर विचार करें। क्रेडिट कार्ड पर सामान खरीदना तो कई बार और भी महंगा ऑप्शन साबित हो सकता है।

समझें जरूरत-दिखावे का अंतर: कई बार लोग जरूरत न होने पर भी देखा-देखी या दिखावे के चक्कर में अनावश्यक घरेलू सामान खरीद लेते हैं। यहां ध्यान देने की बात यह है कि घरेलू सामान या उपकरणों की रीसेल वैल्यू बहुत कम होती है। साथ ही इन प्रोडक्ट्स का लाइफ स्पैन भी काफी कम होता है। इसलिए ये सामान तभी खरीदें, जब आपको इनकी जरूरत हो। जीरो इंटरेस्ट के छलावे में आकर सिर्फ दिखावे के लिए ऐसे सामानों की खरीद, आपके घरेलू बजट पर बुरा असर डाल सकती है।

तुलनात्मक लाभ को समझें: अगर आप अपने पास पर्याप्त रकम होने के बावजूद लोन पर सामान खरीद रहे हैं, तो ऐसा करना तभी ठीक होगा जब आप अपनी रकम को किसी ऐसी जगह निवेश कर रहें हों, जहां से तुलनात्मक रूप से आपको ज्यादा रिटर्न (फायदा) मिल सकता है। ऐसी स्थिति में आप फायदे में रहेंगे। अन्यथा लोन लेना सही नहीं रहेगा। *

दायित्व
विजय सिंह चौहान

जब हम किसी के लिए कुछ अच्छा या उसकी मदद करते हैं तो इससे उस जरूरतमंद इंसान का भला तो होता ही है, हमें भी संतुष्टि मिलती है। इसलिए ऐसे अवसर को कभी न गवाएं।

जितना हो सके संभव
बनें किसी का सहारा

एक वृक्ष बिना किसी अपेक्षा के हमें छाया देता है, फल-फूल देता है, लकड़ी और प्राण वायु तक देता है। वह न तो कुछ संजोता है और न ही प्रतिदान की आकांक्षा रखता है। उसका समर्पण पूर्णतः निःस्वार्थ होता है। पेड़ ही नहीं पूरी प्रकृति हमें देना, दूसरों का भला करना सिखाती है। प्रकृति का मौन संदेश है-सब कुछ देकर भी विनम्र बने रहना।

हम समझें अपना दायित्व: मानव होने के नाते हमारा भी यह उत्तरदायित्व बनता है कि हम समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को जानें, समझें और उन्हें निभाएं। किसी भटके को राह दिखाना, लड़खड़ाते को थाम लेना, निराश को आशा देना-एक इंसान, एक सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारा सामाजिक दायित्व है।

मनुष्य होने की सार्थकता: जब भी किसी जरूरतमंद की मदद करने की बात आती है, तो कई लोगों के मन में यह प्रश्न उठता है, 'मैं ही क्यों मदद करूं?' जरा ध्यान से सोचें, तो इस प्रश्न का उत्तर हमें स्वयं ही मिल जाएगा। आज हम आभासी दुनिया में उलझे हुए हैं, मानवीय संवेदनाएं सूखती जा रही हैं। हम समस्याओं को पहचानते हैं, उन पर चर्चा भी करते हैं, पर रुक कर किसी की सहायता करना जैसे भूलते जा रहे हैं। यदि हमारा छोटा-सा प्रयास, हमारी थोड़ी-सी मदद किसी के जीवन में रोशनी भर सकती है, तो हमें इस तरह के प्रयास जरूर करने चाहिए। ऐसा न करके हम एक जरूरतमंद-लाचार को मदद से वंचित तो रखते ही हैं, साथ ही यह एक इंसान के रूप में स्वयं से भी छल है। मनुष्य वही है, जो मनुष्य के काम आए। इसलिए अगर आप समर्थ हैं तो आपको अपने सामर्थ्य के अनुसार किसी जरूरतमंद की मदद जरूर करनी चाहिए। ध्यान रखें, वास्तविक परोपकार केवल दान-पुण्य तक सीमित नहीं होता। यह एक सोच है, एक जीवनशैली जो हमें 'मनुष्य' होने के सही अर्थ से जोड़ती है।

हम क्या कर सकते हैं: अगर मन में परोपकार की सच्ची भावना है, तो हम कई तरह से किसी जरूरतमंद की मदद कर सकते हैं। किसी निर्धन बालक की शिक्षा में सहयोग करें, उसे किताबें दें या थोड़ा-सा समय निकाल कर स्वयं पढ़ाएं। ज्ञान का दीपक एक बार जल जाए, तो वह अनेक दीपों को रोशन कर सकता है। अगर आपके पास आर्थिक संसाधन सीमित हों तो तन से सेवा करें। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, अस्पतालों या वृद्धाश्रमों में सहयोग कर सकते हैं। रक्तदान जैसे महादान के माध्यम से भी हम मानव सेवा या परोपकार कर सकते हैं।

व्यवहार से परोपकार: आप अपनी वाणी, अपने व्यवहार से भी किसी को उपकृत कर सकते हैं, किसी का संबल बन सकते हैं। आज असंख्य लोग अवसाद और अकेलेपन से जूझ रहे हैं, विशेष रूप से हमारे बुजुर्ग। ऐसे में अपनत्व भरे दो शब्द उनके जीवन की संध्या में उजास भर सकते हैं। किसी बुजुर्ग का हाथ थाम लेना, उनकी मन की सुन लेना, यह छोटा-सा आत्मीय व्यवहार उनके लिए अमूल्य हो सकता है।

कर सकते हैं सार्थक प्रयास : सेवानिवृत्त हो चुके बुजुर्ग और कुशल युवा, समाज के जरूरतमंद तबकों की मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अपने अनुभव और ज्ञान से वे जरूरतमंद युवाओं और किशोरों को आत्मनिर्भर बनने में मार्गदर्शन दे सकते हैं। उनकी यह सेवा तात्कालिक नहीं, दीर्घकालिक प्रभाव वाली होगी।

दीर्घकालिक संस्कार: जब हम यह सोचने लगते हैं, 'मैं समाज को क्या दे सकता हूं?' तभी हम सच्चे अर्थों में मनुष्यत्व के नजदीक पहुंचते हैं। हमारा एक छोटा-सा प्रयास किसी के जीवन में आशा बनकर खिल सकता है। वास्तव में, परोपकार कोई क्षणिक भाव नहीं, बल्कि दीर्घकालिक संस्कार है। तो आइए समाज को कुछ देने का हर संभव प्रयास करें। *

जानकारी
सुनील कुमार महला

अब कम सुनाई देती है
झींगुरों की झांय-झांय!

बारिश के मौसम में ग्रामीण या पेड़-पौधों से भरे इलाकों में सूरज ढलते ही झींगुरों की झांय-झांय सुनाई देने लगती है। कभी-कभी तो दिन के समय भी जब बारिश के कारण मौसम में ठंडक होती है, वातावरण झांय-झांय की आवाज से गूंजने लगता है। लेकिन शहरों में झींगुरों के बारे में देखने-सुनने को नहीं मिलता। आखिर इसके पीछे कारण क्या हैं?

कम होने के कारण: बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, तीव्र विकास, ग्लोबल वार्मिंग के कारण जंगलों का घनत्व कम होता जा रहा है। इंसानी शोर बढ़ने से ही झींगुरों की झांय-झांय पर लगातार खतरा मंडरा रहा है। इस संबंध में कुछ समय पहले एक शोध के नतीजे बीएमसी इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन जर्नल में प्रकाशित हुए थे। इसके मुताबिक इंसानों के बढ़ते शोर से न सिर्फ झींगुरों का संगीत मंद पड़ा है, बल्कि उनका जीवन काल भी घट गया है।

ऐसे उत्पन्न होती है आवाज: नर झींगुर अपनी विशेष आवाज (झांय-झांय) के लिए जाने जाते हैं। यह ऐसी ध्वनि होती है, जो उनके पंखों के घर्षण से उत्पन्न होती है, जिसे स्ट्रिड्यूलेशन कहते हैं। दरअसल, इस तरह की ध्वनि के दो उद्देश्य होते हैं। एक, यह मादा झींगुरों को आकर्षित करता है और दूसरा इसके जरिए अन्य नर झींगुरों के बीच क्षेत्रों को निर्धारित करते हैं। ये मुख्य रूप से रात में सक्रिय रहते हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण: झींगुर विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्रों में मुख्य रूप से अपघटन, पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण और कीट नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सड़ने वाले कार्बनिक पदार्थों को खाते हैं, जिससे पोषक तत्वों को वापस मिट्टी में मिलाने में मदद मिलती है। दूसरे शब्दों में कहें तो झींगुर मृत पौधों और जानवरों के अवशेषों को खाते हैं, जिससे वे छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं और हमारे पर्यावरण में अपघटन की प्रक्रिया में मदद करते हैं। अपघटन की क्रिया से झींगुर विभिन्न पोषक तत्वों को मिट्टी में या इस धरती पर वापस छोड़ते हैं। *

फिल्म-ट्रेंड
हेमंत पाल

बॉलीवुड में जिन रिश्तों या भावनाओं को आधार बनाकर कई सफल फिल्में बनीं, उनमें से एक दोस्ती भी है। इन फिल्मों को दर्शकों ने भी खूब पसंद किया। दोस्ती के अलग-अलग रंगों से सजी कुछ फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मों में खूब नजर आए हैं
दोस्ती के अलग-अलग रंग

'दोस्ती' ने कायम की फिल्मी दोस्ती की मिसाल

'सौदागर' में दिखी राजकुमार-दिलीप कुमार की दोस्ती

हम सभी की जिंदगी में दोस्त बहुत अहमियत रखते हैं। यही वजह है कि जिंदगी के अलग-अलग शेड्स को सिल्वर स्क्रीन पर पेश करने वाले फिल्मकारों ने भी दोस्त और दोस्ती की फीलिंग पर कई यादगार फिल्में बनाई हैं। हिंदी फिल्मों के शुरुआती दौर से कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनमें दोस्ती के रिश्ते को बड़ी ही खूबसूरती के साथ पेश किया गया। दोस्ती पर आधारित ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला।

मील का पत्थर बनी 'दोस्ती': जब भी दोस्त और दोस्ती पर बनी फिल्मों का जिक्र होता है, 1964 में राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोस्ती' के बिना बात पूरी नहीं होती। अपने समय की यह सुपरहिट फिल्म थी। फिल्म में शारीरिक रूप से अक्षम दो गरीब दोस्तों रामू और मोहन की कहानी दिखाई गई है। फिल्म में रामू (सुशील कुमार सोमैया) पैर से अक्षम होता है और मोहन (सुधीर कुमार सावंत) की आंखें नहीं होती हैं। वे दोनों एक-दूसरे के साथ मिलकर जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं। दोस्ती जैसे विषय पर बनी फिल्मों के बीच एक मील का पत्थर है यह फिल्म। उसके बाद तो दोस्ती की मिसाल वाले इस विषय को कई बार घुमा फिराकर परोसा जाता रहा। 'दोस्त', 'खुदगर्ज' 'चश्मेबद्दूर' और 'काई पो चे' में दोस्ती को अलग-अलग ढंग से पेश किया गया।

इन कलाकारों ने कई फिल्मों में निभाई दोस्ती: बॉलीवुड के बिग बी यानी अमिताभ बच्चन की कई फिल्मों का केंद्रीय विषय दोस्ती रहा। 'जंजीर', 'शोले', 'नमक हराम', 'हेराफेरी', 'शान', 'सुहाग', 'दोस्ताना', 'मुकद्दर का सिकंदर' जैसी फिल्मों को याद कीजिए। इन सभी सफल फिल्मों में अमिताभ और अन्य कलाकारों के बीच की दोस्ती के विभिन्न रंगों को अलग-अलग ढंग से पेश किया गया। 'हेराफेरी', 'मुकद्दर का सिकंदर' में अमिताभ और विनोद खन्ना की दोस्ती दिखाई गई। 'दोस्ताना' में शत्रुघ्न सिन्हा के साथ अमिताभ की दोस्ती मिसाल के रूप में याद की जाती है। 'शोले' में जय (अमिताभ बच्चन) और वीरू (धर्मेंद्र) की दोस्ती को कौन भूल सकता है भला! अमिताभ और धर्मेंद्र की दोस्ती बाद में 'चुपके-चुपके' और 'राम बलराम' जैसी फिल्मों में भी दिखी। राजेश खन्ना के साथ अमिताभ ने 'आनंद' और 'नमक हराम' में दोस्ती को जीवंतता दी। शशि कपूर के साथ 'ईमान धरम' और 'सुहाग' जैसी फिल्मों में अमिताभ ने यही दोस्ती निभाई।

'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' में दिखी नए दौर की दोस्ती

धर्मेंद्र भी उन कलाकारों में हैं, जिन्होंने कई एक्टर्स के साथ फिल्मी दोस्ती का किरदार अदा किया। फिल्मों में धर्मेंद्र की दोस्ती शत्रुघ्न सिन्हा और विनोद खन्ना के साथ कई बार बनी। इनके अलावा अनिल कपूर-जैकी श्रॉफ, अक्षय कुमार-सुनील शेट्टी और संजय दत्त-गोविंदा की दोस्ती पर बनी फिल्मों को भी दर्शकों ने खूब पसंद किया।

दोस्ती और प्रेम त्रिकोण: दोस्ती और प्रेम त्रिकोण पर आधारित कई हिंदी फिल्में बनीं और सफल हुईं। दो दोस्तों की दोस्ती के बीच एक लड़की आ जाती है। फिर या तो गलतफहमी पनपती है या प्रेम त्रिकोण बन जाता है। क्लाइमैक्स में या तो गलतफहमी दूर हो जाती है या फिर एक दोस्त का त्याग सामने आता है। इस तरह की फिल्मों का चलन शायद राज कपूर, राजेंद्र कुमार की फिल्म 'संगम' से शुरू हुआ था। आगे चलकर इस तरह की कई फिल्में बनीं और सफल हुईं।

'शोले' में जय-वीरू की यादगार दोस्ती

यादगार है 'सौदागर' की दोस्ती: 1991 में सुभाष घई ने फिल्मी दुनिया के दो दिग्गजों दिलीप कुमार और राज कुमार को दोस्ती की डोर में बांधा और फिल्म बनाई-सौदागर। इस फिल्म की गिनती दोस्ती पर आधारित श्रेष्ठ फिल्मों में होती है।

दिखे दोस्ती के कई रूप: हर दौर में दोस्ती के आधार पर बनाई गई फिल्मों में दोस्ती के अलग-अलग रूप नजर आते रहे हैं। 'दिल चाहता है' तीन दोस्तों, आकाश (आमिर खान), समीर (सैफ अली खान) और सिद्धार्थ (अक्षय खन्ना) की कहानी है, जो अपनी जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों से गुजरते हुए दोस्ती के महत्व को समझते हैं। '3 इडियट्स' तीन इंजीनियरिंग छात्रों की कहानी है, जो अपनी पढ़ाई, करियर और जीवन के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं, पर उनकी दोस्ती बनी रहती है। 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' तीन दोस्तों की कहानी है जो बैचलर पार्टी के लिए स्पेन जाते हैं और वहां अपनी दोस्ती के नए आयाम ढूंढते हैं। बीते कुछ दशकों में ऐसी फिल्में भी बनाई गईं, जिनमें दोस्ती तो थी, पर फिल्म का केंद्रीय विषय कुछ और ही था। 'रंग दे बसंती', 'कुछ-कुछ होता है', 'दिल तो पागल है' और 'चश्मे बद्दूर' जैसी फिल्मों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। कहने का सार है कि दोस्ती पर फिल्म बनने का सिलसिला आज भी जारी है। जिसे दर्शक पसंद भी खूब करते हैं। *

हरिभूमि रविवार भारती

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

रोहतक,रविवार 3 अगस्त 2025

मित्रता दिवस आज

बाकी सारे रिश्ते तो हमें जन्म से मिलते हैं, एक दोस्ती का रिश्ता हम खुद ही बनाते हैं। स्वार्थ से परे, सुख-दुख पर हमेशा साए की तरह मौजूद रहने वाला यह रिश्ता हमारे लिए सबसे अधिक मायने रखता है। भले ही समय के साथ इसका स्वरूप बदल गया हो लेकिन आज भी यह उतना ही मूल्यवान है।

सबसे प्यारा-अनमोल दोस्ती का रिश्ता

कवर स्टोरी

अंशु सिंह

इस दुनिया में तरह-तरह के लोग रहते हैं। कुछ हमारे परिवार के सदस्य होते हैं, कुछ रिश्तेदार। कुछ हमसे प्रेम करते हैं तो कुछ हमसे ईर्ष्या करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो बिना किसी फायदे के जरूरत पड़ने पर हमारी हर संभव मदद करने को सदैव तत्पर रहते हैं। हमें जीवन का सही मार्ग दिखाते हैं। दुख और मुश्किल समय में साथ खड़े होते हैं। उन्हें ही हम दोस्त कहते हैं। यह दोस्ती हमारे आपसी विश्वास और आस्था पर टिकी होती है।

स्वार्थ से परे आत्मीय रिश्ता: किसी ने कहा है, 'मुझे अपने मित्रों के बारे में बताइए, मैं आपके व्यक्तित्व के बारे में बता दूंगा।' वास्तव में आपके दोस्त किस तरह के हैं, वह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि आपका जीवन में क्या लक्ष्य है? आपका चरित्र कैसा है, आपकी सोच कैसी है?

सच में, धन-दौलत तो बहुत से लोग कमा लेते हैं। लेकिन दोस्ती जैसा सच्चा धन हर कोई नहीं कमा पाता। इस दुनिया में हर इंसान को एक ऐसे शख्स की जरूरत होती है, जिसे वह अपनी दिल की बातें बेझिझक बता सके। इसलिए दोस्त वो होता है, जिस पर आंख बंद कर भरोसा किया जा सके। दोस्तों के बीच स्वार्थ का कोई स्थान नहीं होता। न ही दोस्ती किसी की जाति, पंथ या धर्म देखती है।

पुराणों-इतिहास में मित्रता: हिंदू पौराणिक कथाओं में मित्रता के कई आदर्श उदाहरण देखे जा सकते हैं। जैसे, भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा, वानर राज सुग्रीव एवं भगवान श्रीराम, श्रीराम एवं विभीषण की मित्रता हमारे लिए आज भी आदर्श हैं। इतिहास पर नजर डालें तो 19वीं सदी के शुरुआती दौर में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और मोहम्मद अली जिन्ना बहुत अच्छे दोस्त हुआ करते थे। वे अकसर घर-सार्वजनिक स्थलों पर मिलकर अंग्रेजों को देश से खदेड़ने के तरीकों पर चर्चा करते थे। मुगल काल में छत्रपति शिवाजी और तानाजी भी बचपन के दोस्त थे। बाल्यकाल से ही दोनों मुगलों के अधीन किलों पर विजय पाने की रणनीति बनाया करते थे। जैसे-जैसे दोनों बड़े हुए, शिवाजी ने तानाजी की मदद से कई लड़ाइयां जीतीं और तानाजी उनके योद्धा सेनापति बन गए। इस तरह उन्होंने आजीवन अपनी दोस्ती की मिसाल कायम की। उनकी दोस्ती इतिहास में अमर हो गई।

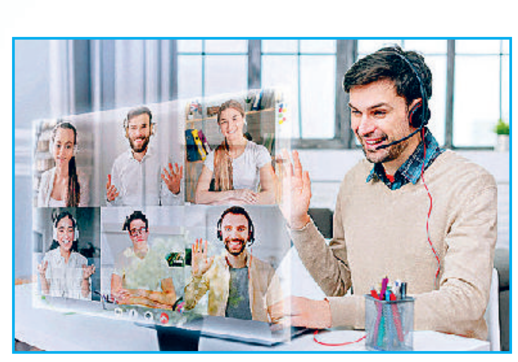

होता है मार्गदर्शक : दोस्ती का संबंध ही ऐसा होता है कि वे सदा एक-दूसरे के लिए मौजूद रहते हैं। अपने दोस्त का हित करने के लिए व्यक्ति उसकी नाराजगी भी झेलने को तैयार रहता है। एक सच्चा दोस्त हमेशा अपने दोस्त का सबसे बड़ा शुभचिंतक होता है, उसका मार्गदर्शक होता है। हो सकता है कि किसी समय कुछ देर के लिए अपने मित्र की बातें या कार्य आपको उचित न लगें। लेकिन कभी न भूलें कि सच्चा मित्र हर स्थिति में आपका हित ही चाहता है। अगर वह कोई कार्य करने से आपको रोकता है तो उसमें जरूर आपका हित ही होगा। हो सकता है उसका मनोभाव आपको कुछ समय बाद समझ में आए।

मित्रता पर भी पड़ा तकनीकी प्रभाव: पिछले दो-तीन दशकों में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारणों से मित्रता में काफी बदलाव आया है। 20 वीं सदी तक दोस्ती खतों और आमने-सामने की मुलाकातों के जरिए कायम रहती थी। फिर टेलीफोन और बाद में इंटरनेट ने संपर्क बनाए रखना आसान बना दिया। इक्कीसवीं सदी में टेक्स्ट मैसेज, सोशल मीडिया और वीडियो कॉल के जरिए संवाद होने लगा। व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म ने तो दोस्ती बनाने और निभाने के तरीके को पूरी तरह बदल कर रख दिया। इनसे लोग दुनिया भर में एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं। हालांकि इसमें ज्यादातर रिश्तों में गहराई नहीं होती। कह सकते हैं कि दोस्ती की परिभाषा व्यापक हो गई है। आज दोस्ती पारंपरिक बाधाओं को पार करते हुए अधिक विविध और समावेशी तरीकों से विकसित हो सकती है। बहरहाल, समय और दौर कोई भी हो, दोस्ती आज भी दो इंसानों के बीच सबसे प्यारा और अनमोल रिश्ता होता है। *

दोस्ती से बेहतर रहता है मानसिक स्वास्थ्य

पल्लवी प्रकाश
साइकोलॉजिस्ट-मोटिवेशनल कोच

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी दोस्ती का बहुत अधिक महत्व होता है। दोस्त, भावनाओं को व्यक्त करने, समस्याओं को साझा करने और सलाह लेने के लिए एक आत्मीय साथ प्रदान करता है। इस भावनात्मक समर्थन से तनाव, चिंता और उदासी सभी को कम किया जा सकता है। फ्रेंडशिप नेटवर्क का हिस्सा होने से व्यक्ति जुड़ाव और खुद को मूल्यवान महसूस करता है। यह अपनेपन की भावना मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है और उसे अकेलेपन, अलगाव की भावनाओं से बचा सकती है। दोस्त नियमित व्यायाम, संतुलित आहार जैसी स्वस्थ आदतों को प्रोत्साहित करके और धूम्रपान या अत्यधिक शराब पीने जैसे हानिकारक आदतों से बचाकर व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

बॉलीवुड में दोस्ती

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में पिछले कुछ सालों में बहुत कुछ बदला है। एक ऐसी इंडस्ट्री जो अधिकतर बिजनेस बेनिफिट और स्वार्थ के लिए जानी जाती है। उस माहौल में भी कई स्टार्स की दोस्ती एक मिसाल की तरह है। जैसे, करीना-अमृता-मलाइका की एक दशक से भी ज्यादा पुरानी दोस्ती आज भी उतनी ही मजबूत और अटूट बनी हुई है। बॉलीवुड स्टार शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान, अनन्या पांडे और शनाया कपूर बचपन की दोस्त हैं। अनन्या, शनाया को सोल सिस्टर कहती हैं। अभिनेता रणबीर कपूर और निर्देशक अयान मुखर्जी का ब्रोमांस इंडस्ट्री में बेहद चर्चित है। सलमान खान और अजय देवगन भी वर्षों से पक्के दोस्त हैं। इस बारे में अजय कहते हैं, 'सलमान और मैं एक ही समय पर इंडस्ट्री में आए थे। पिछले 25 सालों से हमारी दोस्ती बरकरार है।'

सेल्फ मोटिवेशन

राजयोगी बीके निकुंज जी

हमेशा साथ रहता है हमारा सच्चा मित्र

यह सही है कि आज के दौर में सच्चा मित्र मिलना बहुत कठिन है। बिना किसी स्वार्थ के हमेशा साथ रहने वाला सच्चा मित्र। ऐसे ही सच्चे मित्र की तरह ईश्वर भी हमेशा हमारे साथ रहता है।

जरूरत के वक्त जो साथ दे, वही सच्चा मित्र होता है। यह पुरानी कहावत आज भी उतनी ही सच है, जितनी वर्षों पहले थी। जीवन के किसी न किसी मोड़ पर हम सभी ने इसे अनुभव किया है, कभी किसी अजनबी से, तो कभी उस शख्स से जिससे हमें कोई उम्मीद नहीं थी। लेकिन आज, जब हमारे जीवन में रिश्तों से ज्यादा 'कांटेक्ट्स' हैं, और मित्र बस केवल स्क्रीन पर दिखाई देने वाले नाम बनकर रह गए हैं, तब यह सवाल जरूरी हो गया है कि मित्रता वास्तव में हमारे लिए क्या मायने रखती है?

हर रिश्ते से ऊपर: जब आप आंखें बंद करके खुद से यह पूछते हैं कि मेरे जीवन में कौन वास्तव में मायने रखता है? तो आपका ध्यान शायद उस व्यक्ति की ओर नहीं जाता, जिसने आपको योग्य सलाह दी। बल्कि उस व्यक्ति को मन याद करता है, जो उस समय चुपचाप आपके कंधे पर हाथ रखकर पास बैठा रहा, जब आपकी दुनिया बिखर रही थी। जी हां! मित्रता वही रिश्ता है, जो न खून के रिश्ते से बंधा होता है, न शर्तों पर टिका होता है। एक सच्चा मित्र आपको वैसे ही स्वीकार करता है, जैसे आप हो न कि जैसे वह आपको देखना चाहता है। शायद इसलिए ही परिवार या रिश्तेदार से ऊपर हम हमेशा मित्रता को रखते हैं क्योंकि यही एक ऐसा रिश्ता है, जो हम अपनी पसंद से चुनते हैं।

बनता है आत्मिक संबंध: एक सच्चा मित्र शायद हमसे हमारी पसंद की बात हमेशा कह न पाए, लेकिन उसकी बात सीधे दिल तक पहुंचती है और इसीलिए उस व्यक्ति के साथ हमें एक आत्मीयता सी महसूस होती है, जो न किसी तर्क पर टिकी होती है, न किसी प्रयोजन पर। जब यह जुड़ाव दोनों ओर से होता है, जब आत्माएं एक-दूसरे को पहचानें और सम्मान दें, तब एक सुंदर संबंध का जन्म होता है। एक ऐसा संबंध, जो जीवन भर और शायद उसके बाद भी बना रहता है।

सच्ची नहीं आभासी मित्रता: आज बदलते युग में मित्रता का अर्थ बदलता जा रहा है। आज हम सहकर्मी, सहपाठी, जिम के साथी या सोशल मीडिया फॉलोअर्स को भी मित्र कह देते हैं। लेकिन साथ रहना और दिल से जुड़ना इन दोनों में बड़ा फर्क है। फेसबुक फ्रेंड होना, इंस्टाग्राम पर जन्मदिन की बधाई देना, ये सब असली मित्रता नहीं है। सच्ची मित्रता वहां होती है, जहां भावनात्मक समानता होती है, दिल से दिल का रिश्ता होता है, जहां न अहं होता है और न किसी भी प्रकार की अपेक्षा।

सवाल उठता है कि तो कौन होता है सच्चा मित्र? एक ऐसा व्यक्ति जिसके समक्ष आप बिना किसी मुखौटे के अपने मूल रूप में रह सकें, बिना कुछ छुपाए, बिना कुछ साबित किए। जो आपके दोषों को जानकर भी आपका साथ न छोड़े। जो शब्दों से नहीं, मौन से भी दिल तक पहुंच जाए और एक हल्के से स्पर्श या दृष्टि से आपको यह जता दे 'मैं यहीं हूं तुम्हारे साथ।' आज के इस तेज रफ्तार जीवन में, सबसे दुर्लभ बात है, उपलब्धता। वर्तमान काल में ऐसा कोई है, जो बिना विचलित हुए बस आपकी बात सुने? है कोई ऐसा? आजकल तो सभी से ज्यादातर, 'थोड़ी देर बाद बात करते हैं', फिर से कॉल करता हूं', 'थोड़ा बिजी हूं' यही सब सुनने को मिलता है, जो भावनात्मक दूरी की नई भाषा बन चुके हैं। इसीलिए इस बात से कोई इंकार नहीं करेगा कि आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां रिश्ते भी सुविधाओं के अनुसार चलते हैं। जब जरूरत हो, तब याद किया जाता है। जब हम किसी के काम के नहीं रहते, तो भुला दिए जाते हैं।

ईश्वर होता है हमारा परममित्र: आज के समय में ऐसा मित्र मिलना मुश्किल है, जो बिना किसी अपेक्षा के, बिना किसी शर्त के साथ दे। मैंने अपने अनुभव में पाया कि सबसे स्थायी, सबसे निःस्वार्थ मित्रता मुझे इंसानों में नहीं, बल्कि किसी और में मिली, सर्व शक्तिमान परमात्मा में। जी हां, उस दिव्य सत्ता में जिसे आप भगवान, ईश्वर, खुदा, सर्वोच्च आत्मा या सिर्फ मेरा सबसे प्यारा मित्र कह सकते हैं। हम प्रार्थना में अकसर उसे पिता, माता, गुरु या मार्गदर्शक कह कर पुकारते हैं। लेकिन क्या कभी आपने उससे एक मित्र की तरह बात की है? बिना किसी औपचारिकता, बिना किसी रीति-नीति के, बस सीधे दिल से? एक बार कोशिश कीजिए। जैसे अपने सबसे करीबी दोस्त से आप बात करते हैं, वैसे ही उनसे भी करिए, बिना कोई डर, बिना संकोच। फिर देखना आप अंदर ही अंदर महसूस करेंगे एक ऐसी शांति, ऐसा सुकून, जो किसी मानवीय रिश्ते में नहीं मिलता। उसका प्रेम प्रदर्शन पर नहीं अपितु उपस्थिति पर आधारित है। बस उसे दिल से याद कीजिए और वो आपकी हर धड़कन में मौजूद मिलेगा। *

लाइफस्टाइल

शिखर चंद जैन

अच्छे दोस्त मिलना सौभाग्य की बात है। इससे जिंदगी गुलजार हो जाती है। इसलिए किसी को अपना घनिष्ठ दोस्त बनाने से पहले उसमें मौजूद कुछ क्वालिटीज के बारे में जरूर जान लेना चाहिए।

जिंदगी में बहुत जरूरी हैं ऐसे दोस्त

जिंदगी में अच्छे दोस्तों की अहमियत बहुत ज्यादा है, क्योंकि हम जो कुछ भी हैं अपने आस-पास के लोगों, अपनी संगत और माहौल की वजह से ही हैं। हमारे सपने, लक्ष्य, सोचने और काम करने का तरीका, रहन-सहन और जीने का अंदाज बहुत कुछ उन्हीं लोगों से प्रभावित होता है, जिनके साथ हम अपना ज्यादातर वक्त बिताते हैं। इसे मनोविज्ञानी लॉ ऑफ अट्रैक्शन कहते हैं। अमेरिकी व्यवसायी जिम रॉन ने कहा है कि आप उन 5 लोगों का एवरेज होते हैं, जिनके साथ आप हमेशा रहते हैं। इसलिए दोस्त बनाने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।

जो देते हैं स्मार्ट सोशल सपोर्ट: हम जो कुछ करते हैं, उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बहुत सारे लोगों का इंवॉल्वमेंट होता है। पर्सनल लाइफ हो या प्रोफेशनल लाइफ, अपने आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और शारीरिक हितों के लिए हमें कुछ लोगों पर निर्भर होना पड़ता है, अच्छे दोस्त यह जरूरत पूरी करते हैं।

जो ज्यादा समझदार हों: महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने कहा था, 'अगर आप अपने इनर सर्किल में सबसे स्मार्ट या बुद्धिमान व्यक्ति हैं तो आप एक गलत सर्किल में रह रहे हैं।' कहने का तात्पर्य यह है कि आपको खुद से ज्यादा सफल, सक्षम, समझदार और प्रतिष्ठित दोस्तों के बीच रहना चाहिए। इसलिए आप ऐसे लोगों को दोस्ती के लिए चुनें, जो आपकी सफलता और मानसिक सुकून में आपके साथी बन सकें।

जिनका साथ अच्छा लगे: मानसिक बीमारियों के प्रबल वर्तमान दौर में मन का सुकून बड़ी दुर्लभ चीज हो गई है। अधिकांश इंसान दुश्चिंता और अवसाद से घिरे रहते हैं। ऐसे में जिन लोगों के बीच रहकर आपको मानसिक सुकून मिलता हो, जिनके साथ हंसी-मजाक का दौर चलता हो, उन्हें अपनी जिंदगी का हिस्सा जरूर बनाएं।

जिनकी उपस्थिति में सहज महसूस करें: ऐसे दोस्त जिनकी उपस्थिति में आप सहज महसूस करें और अपने मन की बातें बिना लाग लपेट के खुलकर कह सकें, उनको साथ रखना चाहिए। ये ऐसे लोग होते हैं, जिनके कुछ कहने पर आपका ईगो हर्ट नहीं होता और आप कुछ कह दें तो ये भी दिल पर नहीं लेते। ये शॉक एब्जॉर्बर करने वाले लोग, जिनकी आपको जरूरत होती है।

जो बुरे वक्त में साथ खड़े रहते हों: हर व्यक्ति की जिंदगी में दो चार दोस्त ऐसे जरूर होने चाहिए, जो बुरे वक्त में उसके साथ खड़े रह सकें। बीमारी की स्थिति में सही डॉक्टर या अस्पताल तक पहुंचाना और तीमारदारी, दुख की घड़ी में संबल प्रदान करने वाला और आर्थिक मुसीबत के वक्त पैसों की मदद करने वाले लोग निहायत जरूरी हैं। आपको भी ऐसे लोगों से अपने रिश्ते प्रगाढ़ रखने चाहिए।

जो आत्मविश्वास बढ़ाते हों: आप किसी नए प्रोजेक्ट पर काम करना चाहते हैं, कोई नया बिजनेस करना चाहते हैं या चैलेंजिंग जॉब ज्वाइन करना चाहते हैं तो शुरू-शुरू में हिचक रहती है। ऐसे में आप असफल लोगों से राय मांगेंगे तो वे आप को हतोत्साहित कर देंगे। वहीं सकारात्मक स्वभाव के दोस्त आपका आत्मविश्वास बढ़ाएंगे, पॉजिटिव सजेशन देंगे और आपको प्रेरणा देंगे। ऐसे लोगों से मेल मिलाप अवश्य रखें।

जो आपसे ईर्ष्या ना करते हों: कुछ लोग अपने इर्द-गिर्द वालों की तरक्की, खुशहाली और सुकून नहीं देख सकते। ये ईर्ष्यालु होते हैं और मौका मिलते ही टांग खींचते हैं। ऐसे लोगों से दोस्ती करने से दूर रहें। जो लोग आपकी सफलता को सराहते हैं और आपसे प्रेरणा या सलाह लेना चाहते हैं, उन्हें अवश्य अपने सर्किल में रखें। इनसे आप जीवन में कभी खुद को अकेला महसूस नहीं करेंगे। *

दोहे / राजश्री राठी

बरखा नर्तन करे

झंकृत वीणा हृदय की छेड़ रही अनुराग।
बरखा नर्तन यूं करे जैसे पद में राग।।
नैन बाट जोहत रहे भर-भर कर मनुहार।
बरखा का स्वागत करे हृदय कुसुम बन हार।।
बरखा छम-छम यूं करे ज्यूं पायल झनकार।
दुल्हन रूप धरा लिए सज सोलह सिंगार।।
गरजे घन-घन मेघ जब करते बंद किवाड़।
बैरन सी बरखा हुई मन को रही बिगाड़।।
बादरवा घनन गरजे मन मोरा घबराय।
पिया रहे परदेस में नैन नेह बरसाय।।
छम-छम बरखा जो हुई मन मे भरी उमंग।
आसमान में उड़ रही जैसे कोई पतंग।।

कहानी

विनय कुमार पाठक

राखी का तोहफा

बेईमानों से भरी इस दुनिया में भी बहुत से ऐसे ईमानदार हैं, जिनका मन विपन्नता में भी किसी के पड़े बैग में ढेर सारे पैसे देखकर भी नहीं डगमगाता। ऐसे ही एक कबाड़ बटोरने वाले गरीब इंसान की दिल को छूती कहानी।

एआई इमेज

राजेंद्र एक कबाड़ बीनने वाला है, वह रोज की तरह रेलवे स्टेशन पर कचरे के ढेर में अपने काम की चीजें तलाश रहा था। उसकी नजरें बेहद सतर्क थीं-प्लास्टिक की बोतलें, टीन के डिब्बे और अपने काम की अन्य चीजे, उसकी निगाहें तलाश रही थीं। इन्हें वह कबाड़ी को बेचकर कुछ पैसे कमा लेता था। उसने अपनी बोरी में ऐसी कई चीजें भर रखी थीं, लेकिन वह कुछ और सामान बटोरना चाह रहा था।

तभी राजेंद्र की नजर दूर पड़े एक भूरे रंग के हैंडबैग पर पड़ी। 'शायद किसी अमीर आदमी ने यूं ही फेंक दिया होगा।' राजेंद्र ने सोचा। उसे मालूम है, जो चीजें अमीरों के लिए बेकार होती हैं, वही किसी गरीब के लिए बहुत काम की होती हैं। उसे पहले भी कूड़े से एक जोड़ी अच्छे जूते मिले थे, जिसे वह खुद इस्तेमाल कर रहा था। यह बैग उसे कुछ ऐसा ही अवसर लग रहा था।

तेजी से चलकर राजेंद्र उस बैग तक पहुंचा। सौभाग्य से आस-पास कोई और रद्दी बीनने वाला नहीं था। बैग अच्छी हालत में था। बस उसका हैंडल टूटा हुआ था, जिसे कोई मोची आसानी से ठीक कर सकता था। राजेंद्र ने इधर-उधर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा, फिर बैग के बीच वाला चेंबर खोला। अंदर देखा तो उसके होश उड़ गए-उसमें पांच सौ के नोटों की एक मोटी गड्डी थी। साथ ही एक क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड भी रखा दिखा।

यह अप्रत्याशित दौलत देखकर राजेंद्र के मन में खुशी की लहर दौड़ गई। लेकिन दूसरे ही पल उसे अहसास हुआ कि कार्ड उसके किसी काम के नहीं हैं। राजेंद्र ने सुना था कि किसी और के कार्ड इस्तेमाल करने पर जेल हो सकती है। हो सकता है, यहां कहीं लगा सीसीटीवी कैमरा यह सब कवर कर रहा हो। उसका बेवजह फंसने का कोई इरादा नहीं था। एकाएक राजेंद्र के दिमाग में आया, हो सकता है इस बैग के मालिक को पैसों की बहुत जरूरत हो, दवाई या किसी और जरूरी काम के लिए। अपने मन के बोझ को दूर करने के लिए वह सीधे रेलवे स्टेशन जा पहुंचा। स्टेशन मास्टर के केबिन में जाकर बोला, 'साहब, यह बैग मुझे रेलवे ट्रैक के पास मिला था, जब मैं कबाड़ बीन रहा था।'

'ठीक है, जाकर उधर एक किनारे बैठ जाओ।' स्टेशन मास्टर ने कहा। वहां रूम में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह चिंतित दिख रहा था।

'मिस्टर अजय, शायद यही वह बैग है, जिसकी आप तलाश कर रहे थे।' स्टेशन मास्टर ने उस व्यक्ति से पूछा।

'संभव है, मेरी कुलीग मीनाक्षी ने बताया था कि उसका ब्राउन बैग खो गया है। इसका डिटेल इससे मेल खाता है। उसमें आईडेंटिटी कार्ड, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और आज की सैलरी थी।' अजय ने जवाब दिया और राजेंद्र को थोड़ा संदेह की नजर से देखा।

'हां, इसमें पांच सौ के नोटों की मोटी गड्डी और दो कार्ड हैं।' राजेंद्र ने बताया।

'हमें इसकी पुष्टि करनी होगी।' स्टेशन मास्टर ने कहा और बैग खोलकर देखा। अंदर मीनाक्षी माथुर का ऑफिस पहचान पत्र और दोनों कार्ड मौजूद थे। नाम कार्ड पर स्पष्ट लिखा हुआ था।

'अजय जी, प्लीज मीनाक्षी जी को तुरंत फोन करें और बताएं कि उनका बैग मिल गया है, मेरे पास सुरक्षित है। आधार, वोटर कार्ड या पैन कार्ड लेकर आएं और सत्यापन करवा लें।' स्टेशन मास्टर ने कहा।

अजय ने तुरंत मीनाक्षी को कॉल किया। वह पहले से ही बहुत परेशान थी। कॉल उठाते ही बोली, 'मैं अभी आ रही हूं। आधे घंटे में पहुंच जाऊंगी। प्लीज उस सज्जन को रोकिए, जिन्होंने बैग लौटाया है। मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहूंगी। मेरे लिए यह पैसा बहुत जरूरी है।'

'सर, अब मैं जा सकता हूं?' राजेंद्र ने पूछा।

'हां, आप जा सकते हैं। आपकी ईमानदारी सराहनीय है। रेलवे प्रशासन को मैं आपके लिए पुरस्कार की सिफारिश करूंगा। आप अपना नाम और पता नोट करवा दीजिए।' स्टेशन मास्टर ने कहा।

'भाई साहब, जरा रुक जाइए। बैग की मालकिन आने ही वाली हैं, वो आपको व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देना चाहती हैं।' अजय ने आग्रहपूर्वक कहा।

'ठीक है।' राजेंद्र ने कहा और अपना बोरा किनारे रखकर बैठ गया। करीब पैंतालीस-पचास मिनट बाद मीनाक्षी पहुंची, थोड़ी हांफती हुई।

'माफ कीजिए, ट्रैफिक बहुत था, इसलिए देर हो गई।' मीनाक्षी ने कहा। फिर अपना आधार कार्ड देकर प्रक्रिया पूरी की। स्टेशन मास्टर ने उसे बैग सौंप दिया।

'भाई साहब, मैं आपकी ईमानदारी के लिए आपको दिल से धन्यवाद देना चाहती हूं। आज मेरी सैलरी मिली थी, वह कुछ ही घंटों में गुम हो गई। भीड़ में ट्रेन से उतरते समय हैंडल टूट गया था। ढूंढने की बहुत कोशिश की, लेकिन नहीं मिला। मैं आपको कुछ देना चाहती हूं, इसलिए देर हो गई। क्या आपको पता है कि आज रक्षा बंधन है?' मीनाक्षी ने अपने पर्स से एक राखी निकाली और मुस्कुरा दी। राजेंद्र ने बिना झिझक अपना हाथ बढ़ा दिया। मीनाक्षी ने पूरे स्नेह से उसे राखी बांधी। राजेंद्र ने अपनी फटी हुई जेब से एक छोटा पर्स निकाला। उसमें केवल दस रुपए का एक नोट था। उसने उस नोट को निकाला और कहा, 'मेरे पास बस यही है।' 'भैया, आपको कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। आपकी ईमानदारी ही मेरे लिए सबसे बड़ा तोहफा है।' मीनाक्षी ने कहा और अपने बैग की ओर इशारा किया, आगे बोली, 'मैं मिठाई नहीं ला पाई तो कृपया ये पैसे रख लीजिए। अपने लिए मिठाई खरीद लीजिएगा।' उसने बैग से पांच सौ के दो नोट निकाले और राजेंद्र को सौंप दिए।

राजेंद्र थोड़ा झिझका, लेकिन स्टेशन मास्टर और अजय ने उसे कहा, 'यह पैसा स्वेच्छा से दे रही हैं, इसे लेने में कोई बुराई नहीं है।' अंततः राजेंद्र ने पैसे ले लिए और कमरे से बाहर निकल गया।

'आज भी ऐसे नेक लोग हैं दुनिया में।' मीनाक्षी ने अजय से कहा। वह राजेंद्र को जाते हुए तब तक देखती रही, जब तक नजरों से ओझल नहीं हो गया। *